तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 12, अंक - 1, दिसंबर 2023 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल ज़िंदगानी फिर कहाँ
ज़िंदगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहाँ

प्रार्थना

हमें दो ज्ञान प्रभु इतना बुराई भूल जाएँ हम।
दिलों में प्रेम हो सबके लड़ाई भूल जाएँ हम।।

सितारे चाँद सूरज सब लुटाते प्यार हैं जग में।
नदी सागर खिले गुलशन सिखाते प्यार हैं जग में।
जला दिल हो किसी का वो कमाई भूल जाएँ हम।
दिलों में प्रेम हो सबके लड़ाई भूल जाएँ हम।।

मिटा दो भेद मन से रब दुआ इतनी हमारी है।
सहारा है तुम्हारा ही तुम्हारी ही ख़ुमारी है।
निखारो मन बदी की हर पढ़ाई भूल जाएँ हम।
दिलों में प्रेम हो सबके लड़ाई भूल जाएँ हम।।

निगाहें पाक हो जाएँ मिटे हर पाप दुनिया से।
मधुर वाणी सभी की हो मिटे हर श्राप दुनिया से।
बनाओ नेक इतना तुम रुखाई भूल जाएँ हम।
दिलों में प्रेम हो सबके लड़ाई भूल जाएँ हम।।

हमें दो ज्ञान प्रभु इतना बुराई भूल जाएँ हम।
दिलों में प्रेम हो सबके लड़ाई भूल जाएँ हम।।

राधेयश्याम 'प्रीतम'
प्रवक्ता हिंदी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय किरावड़
भिवानी, हरियाणा

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

दिसंबर 2023

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
स्कूल शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
सुधीर राजपाल
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
आशिमा बराड़
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. आर.एस. ढिल्लों
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतपाल शर्मा
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Sunita Devi on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,

New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"ज़िंदगी भी अख़बार की तरह है, यदि आप आज के हो, तो काम के हो। स्वयं को अपडेट रखिए...

- हरियाणा में शैक्षणिक-भ्रमण 5
- छात्राओं ने किए धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र के दर्शन 12
- विज्ञान अवधारणाओं को रोचकता से सिखाया पुष्पा गुजराल साइंस सिटी ने 16
- यादगार रहेगी जैसलमेर की नेचर स्टडी यात्रा 18
- मनाली यात्रा में जीवन का पाठ पढ़ाती प्रकृति 22
- मधुर स्मृतियों का अंग बन गया जयपुर भ्रमण 24
- चिरकाल तक दिलों में बसी रहेगी भोपाल की यात्रा 26
- बाल-दिवस पर मेधावी बच्चों को राज्यपाल ने किया सम्मानित 30
- बाल-संगम भित्ति पत्रिका का विमोचन 31
- The RPwD Act 2016: A Paradigm Shift in Disability Law 32
- You turn into what you tune into... 36
- Career in Archaeology 37
- Navigating Indian Winter Diseases... 40
- Significance of Gurpurab 42
- A World in Pieces 43
- Significance of Gita Jayanti 44
- The Echoes of Emptiness 45
- The Enchanted Pencil 46
- Amazing Facts 48
- General Knowledge 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

चरैवेति-चरैवेति

आस्ते भग आसीनस्य, ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः। शेते निपद्यमानस्य, चराति चरतो भगः।। संस्कृत के इस श्लोक का अर्थ है- बैठे हुए मनुष्य का सौभाग्य बैठा रहता है, उठ कर खड़े होने वाले व्यक्ति का सौभाग्य भी उठ कर खड़ा हो जाता है, लेटे हुए मनुष्य का सौभाग्य सोया रहता है और चलने वाले व्यक्ति का सौभाग्य उसके साथ-साथ चल पड़ता है। इसीलिए कहा गया है- चरैवेति-चरैवेति। रुका हुआ पानी भी जल्दी ही सड़ जाता है। अतः चलना ही ज़िंदगानी है और रुकना मौत की निशानी। भ्रमण से ही तो रास्ते के उन मंजरों से परिचय होगा, जो कई ऐसे पाठ हमें सिखाएँगे, जिन्हें न तो किताबों ने पढ़ाया होगा, न शिक्षकों ने सिखाया होगा। स्कूली विद्यार्थियों के जीवन में ये भ्रमण बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन से विद्यार्थी उस व्यावहारिक ज्ञान को प्राप्त करते हैं, जो विद्यालय की चार-दीवारी में नहीं पाया जा सकता। किसी प्राकृतिक स्थान पर जाकर वहाँ के नैसर्गिक सौंदर्य का आनन्द, ट्रैकिंग या पर्वतारोहण सरीखी साहसिक गतिविधियों से साहस व भय पर जीत पाने की सीख, ऐतिहासिक-यात्रा से स्थान विशेष से जुड़े इतिहास की जानकारी, किसी संस्थान, कार्यालय या कारखाने में जाकर वहाँ की कार्यप्रणाली से परिचय, खेत-खलिहानों से कृषि-कर्म और वनस्पति विज्ञान की जानकारी, किसी चिड़ियाघर, म्यूज़ियम, स्मारक में जाकर वहाँ की चीजों को देखकर जो प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त होता है, वह जीवनभर भुलाया नहीं जाता। हर्ष का विषय है कि प्रदेश के विद्यार्थियों को विभाग द्वारा भ्रमण के अनेक अवसर मुहैया कराए जा रहे हैं, जिनकी विशद जानकारी प्रस्तुत अंक आपको देगा। सदा की भाँति आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

-संपादक

हरियाणा में शैक्षणिक-भ्रमण

शिक्षण को बना रहे प्रभावी

डॉ. प्रदीप राठौर

शिक्षा शास्त्रियों का मानना है कि शिक्षण को अधिक से अधिक सरल, सजीव, रोचक एवं ग्राह्य बनाना चाहिए। जितनी सक्रिय हमारी ज्ञानेंद्रियाँ होंगी, उतना ही अधिक शिक्षण प्रभावी होगा। शिक्षाविदों ने अनुसंधानों से सिद्ध कर दिया है कि शिक्षण को प्रभावी बनाने में क्षेत्रीय भ्रमण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। दरअसल शैक्षिक अनुभवों के द्वारा छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है और कबीर के शब्दों में कहें तो 'कागद की लेखी' से 'आँखिन की देखी' ज्यादा असरदार होती है। 'एडगर डेल' ने अपनी पुस्तक 'ऑडियो वीडियो मैथड्स इन टीचिंग' में माना है कि दृश्य-श्रव्य सामग्री में ऐसी सामग्रियों का शिक्षण में प्रयोग अधिक सफल रहता है, जिसमें ये दोनों गुण हों। शैक्षिक भ्रमण भी ऐसा ही साधन है। भ्रमण विभिन्न स्थानों के हो सकते हैं। स्थान विशेष में बदलाव से भ्रमण के कुछ उद्देश्य बदल सकते हैं, लेकिन कुछ तो एक जैसे ही रहते हैं। उद्देश्य के अनुरूप भ्रमण के स्थान का चयन किया जा सकता है। स्थान के लिहाज से देखें तो इनमें बहुत विविधता है। ये स्थान कोई ऐतिहासिक स्थल, पर्वतीय स्थल, समुद्री तट, वन्य प्रदेश, राष्ट्रीय उद्यान, चिड़ियाघर, शहीदी स्मारक, धार्मिक स्थान, संग्रहालय, विज्ञान भवन, आकाशवाणी, विधानसभा, डाकघर, कारखाने तथा और भी बहुत सारे हो सकते हैं। हम हर्ष के साथ यह बात कह सकते हैं कि विद्यालय शिक्षा विभाग के द्वारा अपने विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमणों के बहुत से अवसर प्रदान किए जाते हैं।

क्या हैं शैक्षणिक भ्रमणों के उद्देश्य-

- भ्रमण विद्यार्थियों की ज्ञानात्मक व भावात्मक योग्यता का विकास करते हैं।
- भ्रमणों से उनकी अवलोकन व निरीक्षण शक्ति का विकास होता है।
- भ्रमण से उनका दृष्टिकोण विस्तृत होता है। इससे उनके विचारों को व्यापकता मिलती है।
- भ्रमण के दौरान जब विद्यार्थियों के किसी ऐतिहासिक, प्राकृतिक , सामाजिक या औद्योगिक केंद्र पर ले जाया जाता है तो वहाँ उन्हें ज्ञान का

व्यावहारिक रूप मिलता है।

» स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े स्थलों का भ्रमण करके बच्चों में शहीदों के प्रति श्रद्धा व राष्ट्र-अनुराग पैदा होता है।

» भ्रमण के दौरान आँखों से देखने के बाद अनेक अस्पष्ट तथ्य व धारणाएँ स्पष्ट हो जाती हैं।

» भ्रमणों से अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ती है। आँखों से देखी चीजों को जब बाद में पुस्तक से पढ़ा जाता है तब वे सुग्राह्य हो जाती हैं।

» भ्रमण से विद्यार्थियों की निरीक्षण, अवलोकन व अन्वेषण की शक्ति बढ़ती है।

» विभिन्न प्राकृतिक स्थलों को देखकर विद्यार्थियों का सौंदर्य-बोध जागृत होता है।

» भ्रमण के दौरान परस्पर सहयोग, सहकारिता, सद्भावना, सहनशीलता व सामूहिकता की भावना विकसित होती है।

» सामान्य व विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों का समावेशन होता है।

समग्र शिक्षा के तहत शैक्षणिक भ्रमण-

समग्र शिक्षा के तहत राज्य के भीतर व राज्य के बाहर एक्सपोजर विजिट्स का आयोजन किया जाता है। 2019-20 में विज्ञान संकाय के 220 मेधावी विद्यार्थियों को वैज्ञानिक महत्त्व के स्थलों का भ्रमण करने के लिए अवसर प्रदान किए गए। यह गतिविधि जिलेवार आयोजित की गई तथा इस पर लगभग साढ़े चार लाख की राशि खर्च की गई। इसी प्रकार इसी सत्र में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के 4400 मेधावी विद्यार्थियों को राज्य के भीतर वैज्ञानिक महत्त्व के स्थानों का भ्रमण कराया गया। यह गतिविधि जिलेवार आयोजित हुई तथा इस पर लगभग नौ लाख की राशि खर्च की गई। इससे पूर्व विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रदेश की छात्राओं को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक महत्त्व वाले स्थानों पर, जैसे कुरुक्षेत्र दिल्ली, मथुरा, आगरा, भरतपुर के पक्षी अभयारण्य, राजस्थान में जयपुर, अक्षरधाम, लाल किला, इंडिया गेट, लोटस टेंपल, जामा मस्जिद आदि स्थानों पर ले जाया जाता है। यात्रा के बाद छात्राओं को एक राइट-अप के माध्यम से अपने अनुभवों को सांझा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इन गतिविधियों से विद्यार्थी न केवल अपने गौरवशाली इतिहास, समृद्ध विरासत से परिचित होते हैं, बल्कि उनकी वैज्ञानिक घटनाओं के प्रति वैचारिक स्पष्टता

बढ़ती है।

साहसिक भ्रमण-

विभाग द्वारा गत सात वर्षों में अनेक एडवेंचर टूर, ट्रेकिंग, पर्वतारोहण अभियान, कोस्टल स्टडी टूर, डेजर्ट स्टडी टूर, नेचर स्टडी टूर का आयोजन किया गया है। इन गतिविधियों में विभिन्न सरकारी स्कूलों के छठी से बारहवीं कक्षा के करीब पन्द्रह हज़ार मेधावी छात्र सफलतापूर्वक भाग ले चुके हैं।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत राजकीय विद्यालयों की मेधावी छात्राओं के प्रोत्साहन के लिए एक पहल के रूप में समृद्ध तटीय शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन प्रतिवर्ष केरल के शिक्षा विभाग के सहयोग से किया जाता है, जिसमें अब तक नौवीं से बारहवीं कक्षा की अब तक लगभग एक हजार छात्राएँ भाग ले चुकी हैं। प्रतिवर्ष मनाली में समर व विंटर एडवेंचर कैंपों का आयोजन नेशनल एडवेंचर क्लब इंडिया, चंडीगढ़ व हरियाणा टूरिज्म के सहयोग से किया जाता है, जिनमें प्रतिवर्ष छठी से बारहवीं कक्षाओं के चार हज़ार से अधिक विद्यार्थी भाग लेते हैं। इनका उद्देश्य छात्रों को उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए अवसर प्रदान करना और उनके आत्मविश्वास में वृद्धि करना है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी भी इन कैंपों का हिस्सा बनते हैं।

राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थान पचमढ़ी, मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर के एडवेंचर कैंपों में हरियाणा प्रदेश के मेधावी विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए भेजा जाता है। इन कैंपों में गत सात वर्षों के दौरान छह हजार से अधिक विद्यार्थी भाग ले चुके हैं। वर्ष 2018-19 के दौरान हरियाणा प्रदेश ने एडवेंचर कार्यक्रमों में भागीदारी के आधार पर राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव हासिल किया है।

हिमाचल से सटे हरियाणा के एकमात्र पर्वतीय क्षेत्र मोरनी और मल्लाह में भी हरियाणा पर्यटन निगम और राष्ट्रीय साहसिक क्लब (भारत) के सहयोग से समर व विंटर एडवेंचर कैंपों का आयोजन किया जाता है।

हरियाणा देश का एकमात्र राज्य है जहाँ विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के लिए पर्वतारोहण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2019 में प्रदेश में यह कार्यक्रम सैनिक स्कूल कुंजपुरा के सहयोग से आरंभ किया गया था, जिसमें अब तक पाँच बार हरियाणा के विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश के मनाली क्षेत्र में स्थित 5,289 मीटर की ऊँचाई पर स्थित 'फ्रेंडशिप पीक' पर सफलतापूर्वक चढ़ाई कर चुके हैं। इसके अलावा प्रदेश के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी लेह क्षेत्र में 6,153 मीटर की ऊँचाई पर स्थित भारत की सबसे ऊँची ट्रैक करने योग्य चोटी 'स्तोक कांगड़ी' पर भी सफलतापूर्वक आरोहण कर चुके हैं। विद्यार्थियों को हिमाचल प्रदेश के लाहौल जिले में बारालाचा दर्रे के पास 6,111 मीटर ऊँची यूनम चोटी पर चढ़ने का सौभाग्य भी मिला है। इस वर्ष राज्य के 50 प्रतिभागी सिक्किम क्षेत्र के कंचनजंगा आधार शिविर के पास 16500 फीट ऊँची रेहनॉक चोटी पर सफलतापूर्वक पर्वतारोहण कर चुके है।

कौशल विकास के लिए फील्ड विज़िट-

हरियाणा के एक हज़ार से अधिक विद्यालयों में

भ्रमण देते हैं प्रत्यक्ष ज्ञान

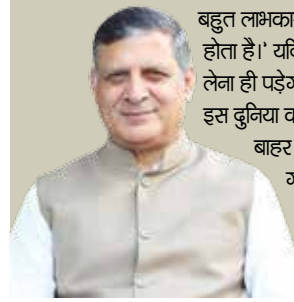

कोई भी शिक्षण सहायक सामग्री भ्रमण का स्थान नहीं ले सकती, क्योंकि छात्रों को वास्तविक व प्रत्यक्ष ज्ञान क्षेत्र विशेष के भ्रमण से ही प्राप्त होता है। शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभकारी होता है। चीनी कहावत है -'एक देखना सौ सुनने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है।' यदि हम ज्ञान को अनुभव केंद्रित बनाना चाहते हैं तो हमें पर्यटन का सहारा लेना ही पड़ेगा। पढ़ी हुई चीज भुलाई जा सकती है, देखी हुई नहीं। देखने से ही हम इस दुनिया का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए विद्यालय की चार-दीवारी से बाहर ले जाकर विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण कराए जाने बेहद आवश्यक हैं। हम गर्व से यह कह सकते हैं कि हम अपने विद्यार्थियों को लगातार ऐसे अवसर दे रहे हैं।

कँवर पाल
स्कूल शिक्षा मंत्री, हरियाणा

एनएसक्यूएफ के तहत इस समय 14 भिन्न-भिन्न कौशलों में लगभग डेढ़ लाख विद्यार्थी व्यावसायिक दक्षता हासिल कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों के हुनर को निखारने के लिए इन्हें इनके कौशल से संबंधित फील्ड विज़िट के लिए ले जाया जाता है। इन फील्ड विज़िट के माध्यम से विद्यार्थी रीयल टाइम वर्क एक्सपीरियंस प्राप्त करके करिकुलम के अनुसार अपने कौशल को उन्नत बनाते हैं। ये फील्ड विजिट वोकेशनल स्किल्स का एक अभिन्न अंग हैं। इससे विद्यार्थी यह जान पाते हैं कि अपने-अपने विद्यालयों में वे जो कौशल वे सीख रहे हैं, समाज में उनकी क्या उपयोगिता है तथा किस प्रकार भविष्य में करियर की संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए ऑटोमोबाइल के बच्चों को जो किताबी ज्ञान अध्यापक ने विद्यालय में दिया वह किस प्रकार ऑटोमोबाइल वर्कशॉप में इस्तेमाल हो रहा है, तथा वर्कशॉप में गाडियों की मरम्मत किस प्रकार हो रही है, यह सब दिखाने व सिखाने के लिए विद्यार्थियों के फील्ड विज़िट पर ले जाया जाता है। इसी प्रकार रिटेल के विद्यार्थी बिग बाजार तथा अन्य बड़ी दुकानों में, पेशेंट केयर के विद्यार्थियों को अस्पतालों व डिसपैंसरियों में, बैंकिंग फाइनेंस एंड सर्विसेज के विद्यार्थियों को बैंकों में व ब्यूटी एंड वैलनैस के विद्यार्थी ब्यूटी पार्लर में भ्रमण के लिए ले जाये जाते हैं।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम के दौरान खूब हुए भ्रमण-

कक्षा तत्परता कार्यक्रम के दौरान हर विद्यालय ने बच्चों के लिए निकटवर्ती क्षेत्रों के शैक्षणिक भ्रमणों का आयोजन किया। विद्यार्थी विद्यालय परिसर से बाहर निकल कर अपने आसपास के परिवेश, संस्थाओं, धार्मिक स्थलों, संग्रहालयों, कारखानों, ऐतिहासिक स्थलों में गए। मकसद यही था कि वे पुस्तकीय ज्ञान के अलावा व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त कर सकें। सत्र में आरंभ के दिनों में आयोजित किए गए ये भ्रमण विद्यार्थियों के लिए खूब उपयोगी सिद्ध हुए। इस दौरान बच्चों ने निकटवर्ती ईंट भट्ठे पर पहुँच कर ईंट बनने की प्रक्रिया समझी। ऐसा

नहीं कि इससे पूर्व उस भट्ठे के नज़दीक से बच्चे नहीं गुज़रते होंगे, लेकिन उस दिन मास्टर जी की देखरेख में भट्ठे पर काम करने वाले लोगों ने बड़े प्यार से विद्यार्थियों को पूरी प्रक्रिया समझाई होगी। बहुत से बच्चों ने अपने-अपने क्षेत्रों के डाकघरों व बैंकों में जाकर वहाँ विभिन्न प्रकार के फार्मों को भरना सीखा। निश्चित तौर पर यह ज्ञान न केवल बच्चों के लिए उपयोगी हुआ, बल्कि उसे सीख कर वे अनेक निरक्षर ग्रामवासियों की मदद करने योग्य भी बन गए। गाँव के वाटर वर्क्स के निकट से गुजरने पर भी बच्चे उसकी प्रक्रिया से अनभिज्ञ थे, इस दौरान बच्चों ने पानी को स्टोर करने, शुद्ध करने व उसकी सप्लाई की प्रक्रिया को पहली बार जाना। शहरी क्षेत्रों के अध्यापकों के साथ विद्यार्थी पुलिस चौकी व थानों में गए। वहाँ उन्हें पुलिस की कार्यप्रणाली, यातायात नियमों व बालश्रम के बारे में कानून की जानकारी मिली। अस्पतालों में जाकर यह जाना कि किस-किस वार्ड में किस-किस रोग का उपचार होता है, रेलवे स्टेशन जाकर आरक्षण की जानकारी प्राप्त की व रेलों की समय-सारिणी को पढ़ना सीखा। इसी प्रकार बस स्टैंड जाकर बस में चढ़ने व उतरने के सुरक्षित तरीके को जाना। कहने का अभिप्राय है कि 'कक्षा तत्परता कार्यक्रम' के दौरान प्रदेश भर के हर विद्यालय में ऐसे भ्रमण आयोजित किए गए, जो विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभकारी साबित हुए।

'प्रमोशन ऑफ साइंस' के तहत शैक्षणिक भ्रमण-

2016 में हरियाणा राज्य की स्वर्ण-जयंती के अवसर पर प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र को नई बुलंदियाँ देने के लिए विस्तृत कार्यक्रम बनाया था। इसमें तीन बातों पर विशेष बल दिया गया। वे थीं- स्वच्छ प्रांगण, सुगम शिक्षा व सुसंस्कार। तीसरे बिंदु यानी सुसंस्कार के तहत यह माना गया कि विद्यार्थियों को ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा के साथ-साथ उनके सर्वांगीण विकास के लिए एवं उन्हें संस्कारवान बनाने की दिशा में विशेष प्रयत्न किए जाएँगे। एनसीसी, एनएसएस, स्काउटिंग-गाइडिंग, कानूनी साक्षरता, खेल, नैतिक शिक्षा, युवा-उत्सवों के साथ-साथ एडवैंचर गतिविधियों व शैक्षणिक भ्रमणों पर विशेष ध्यान देने की बात हुई। इसी वर्ष से प्रदेश के इतिहास में पहली बार बड़े स्तर पर शैक्षणिक भ्रमणों के आयोजन आरंभ हुए। 2017-18 में 'प्रमोशन ऑफ साइंस कम्पोनेंट' से लगभग 50 लाख रुपये की राशि ऐसे भ्रमणों पर विभाग द्वारा खर्च की गई थी। उस वर्ष विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए अटारी बॉर्डर, स्वर्ण मंदिर, दुर्ग्याना मंदिर, साइंस सिटी कपूरथला व राजधानी चंडीगढ़ में भ्रमण की व्यवस्था कराई गई। उस वर्ष लगभग अढ़ाई हजार विद्यार्थियों को यह अवसर दिया गया था।

2019 में भ्रमण-कार्यक्रम का विस्तार-

वर्ष 2019 में हर जिले के विज्ञान संकाय के सौ-सौ विद्यार्थियों के साथ-साथ विकल्प व ऐस टूटोरियल

से शिक्षा ग्रहण कर रहे सुपर-100 के विद्यार्थियों को भी भ्रमण का अवसर प्रदान किया गया। इतना ही नहीं कार्यक्रम को विस्तार देते हुए इस वर्ष छठी से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण कराए गए। वैसे तो इस दौरान विद्यार्थियों को अपने-अपने जिलों के ऐतिहासिक स्थानों के भ्रमण कराए गए, लेकिन धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र, राजधानी दिल्ली व पिंक सिटी जयपुर के निकटवर्ती जिलों के ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण भी कराया गया, यानी कैथल, अंबाला, करनाल आदि जिलों के बच्चों को कुरुक्षेत्र, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी आदि जिलों के विद्यार्थियों को जयपुर तथा नूँह, फरीदाबाद व गुरुग्राम के विद्यार्थियों को राजधानी दिल्ली के ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण के अवसर मिले। इस सत्र में लगभग एक करोड़ की राशि इन भ्रमणों पर खर्च की गई थी।

अब कला व वाणिज्य संकाय भी शामिल-

अब तक वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को ही भ्रमण के अधिक अवसर मिल रहे थे। अब आवश्यकता महसूस हुई कि कला व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को भी ऐसे अवसर प्रदान किए जाएँ। 2020-21 में विज्ञान के विद्यार्थियों के साथ-साथ पहली बार कला व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को भी इन भ्रमणों में शामिल किया गया है। इन दोनों संकायों के भ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन किए गए। विज्ञान के विद्यार्थियों के टूर में साइंस सिटी कपूरथला रखा गया तो अन्य विद्यार्थियों को इसके स्थान पर ऐतिहासिक नगरी करतारपुर साहिब ले जाया गया।

2021-22 में भ्रमण शैड्यूल 26 नवंबर से 11 जनवरी, 2022 तक था। विज्ञान संकाय का भ्रमण पाँच दिन का था। पहले दिन रात्रि में चलकर सुबह के समय अमृतसर पहुँच कर स्वर्ण मंदिर, जलियाँवाला बाग व अटारी बॉर्डर का भ्रमण करवाया गया। दूसरे दिन अमृतसर से कपूरथला स्थित पुष्पा गुजराल साइंस सिटी का भ्रमण करवाकर वहीं पर ठहराव की व्यवस्था थी। तीसरी सुबह चलकर यह भ्रमण अपने अंतिम पड़ाव चंडीगढ़ पहुँचा, यहाँ रॉक गार्डन, रोज़ गार्डन, सुखना लेक व आर्ट एवं म्यूजियम गैलरी को देखा। रात्रि-विश्राम सिटी ब्यूटीफुल में हुआ था। अगले यानी पाँचवें दिन वापसी की यात्रा हुई थी। कला संकाय का भ्रमण पाँच दिन का था। पहले दिन प्रातः चलकर देर शाम को अमृतसर पहुँच कर रात्रि ठहराव। अगली सुबह स्वर्ण मंदिर, जलियाँवाला बाग व अटारी बॉर्डर का भ्रमण। तीसरे दिन अमृतसर से करतारपुर स्थित जंगे-ए-आजादी

का भ्रमण करवाकर अंतिम पड़ाव चंडीगढ़ पहुँचकर रॉक गार्डन, रोज़ गार्डन, सुखना लेक व आर्ट एवं म्यूजियम गैलरी को देखकर रात्रि ठहराव चंडीगढ़ में। तत्पश्चात अगली सुबह चंडीगढ़ से कुरुक्षेत्र का भ्रमण व रात्रि ठहराव के पश्चात वापसी गंतव्य की ओर। भ्रमण का द्वितीय चरण करनाल, कुरुक्षेत्र, कैथल और यमुनानगर जिलों के लिए 6 जनवरी से 12 जनवरी तक था। लेकिन आमिक्रोन के बढ़ते मामलों के चलते हरियाणा सरकार के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए इसे आगामी आदेशों तक स्थगित कर दिया गया था।

मौजूदा सत्र में और विस्तृत किया गया भ्रमण-कार्यक्रमों का दायरा-

फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों का भोपाल भ्रमण-

इस सत्र में प्रथम बार विषय वार भ्रमणों का आयोजन हुआ। पहली बार फाइन आर्ट्स के बच्चों के लिए भोपाल का भ्रमण आयोजित किया गया। यहाँ इस विषय के बच्चों के लिए बहुत कुछ सीखने को था। भोपाल को झीलों की नगरी कहा जाता है, स्वच्छता में यह देश भर में अव्वल है तथा यहाँ पर शौर्य स्मारक, भारत भवन, भीम बेदका, शहीद भवन, बिरला मंदिर तथा मानव संग्रहालय इत्यादि दर्शनीय स्थलों को देखना विद्यार्थियों के लिए एक यादगार अवसर बन गया। फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों ने भीम बेदका की गुफाएँ देखकर कला विषयक ज्ञान को समृद्ध किया। ये गुफाएँ भोपाल से 40 किमी की दूरी पर स्थित हैं। इन 500 से अधिक गुफाओं में खूब शिला-चित्र बने हैं। गौरतलब है कि वर्ष 2003 में इस स्थान को वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया जा चुका है। इसी के साथ-साथ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय देखना भी इन विद्यार्थियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण रहा। श्यामला हिल्ज पर स्थित इस संग्रहालय में छत्तीसगढ़ की आदिवासी संस्कृति को समझने में मदद मिलती है। भोपाल शहर में सम्राट बहादुरशाह द्वारा बनाई गई एशिया की सबसे बड़ी मस्जिद को देखना भी विद्यार्थियों के लिए यादगार अवसर बना। यहाँ का भारत भवन भी कला-संग्रहालय का रूप है। इसमें आर्ट गैलरी, रिहर्सल रूम, पुस्तकालय, फॉक, ट्राइबल आर्ट और मॉडर्न गैलरी दर्शनीय हैं। गौरतलब है कि भीम बेदका की गुफाएँ, साँची स्तूप तथा भारत भवन आर्ट गैलरी आदि 12वीं कक्षा के इतिहास व फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में भी शामिल हैं। इसलिए इन स्थानों का भ्रमण की उपयोगिता और भी बढ़ गई।

यह भ्रमण सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी कारण बना। हरियाणा के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भोपाल के शासकीय सुभाष उत्कृष्ट विद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल में अपने राज्य की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं तथा उनकी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को देखा। 8 से 13 अक्टूबर, 2023 तक के इस भ्रमण में राजकीय विद्यालयों के कक्षा 11वीं के 110 विद्यार्थी व दस अध्यापक शामिल हुए।

इतिहास विषय के विद्यार्थियों का जयपुर भ्रमण-

जयपुर राजस्थान की एक ऐतिहासिक नगरी है, जो 'पिंक सिटी' के नाम से विख्यात है। यहाँ की प्राचीन इमारतें राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य जानकारी उपलब्ध कराती हैं, जिन्हें देखकर प्राचीन वास्तुकला, स्थापत्य कला, मूर्तिकला व राजाओं के रहन-सहन की जानकारी मिलती है। ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हवा महल, नाहरगढ़ किला, आम्बेर किला, खगोलीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण जन्तर-मन्तर, जल महल, बिरला मंदिर, भानगढ़ किला, सरिस्का वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, गलताजी टेंपल आदि स्थान प्राचीन काल की वे जानकारी विद्यार्थियों को दे गए, जो निश्चित तौर पर उन्हें पुस्तकें पढ़ कर नहीं मिल सकती थी। इस भ्रमण में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 11वीं में पढ़ने वाले इतिहास विषय के प्रति जिला पाँच विद्यार्थी सम्मिलित किए गए। संख्या की बात करें तो 14 से 19 अक्टूबर तक आयोजित इस भ्रमण में कुल 110 विद्यार्थी व 10 अध्यापक (पाँच महिला व पाँच पुरुष) शामिल हुए। उक्त दोनों स्थानों के लिए विद्यार्थियों का चयन करते समय यह देखा गया कि उनके 10वीं कक्षा में 75 प्रतिशत या अधिक अंक हों, या उन्होंने ओलंपियाड में कोई स्थान पाया हो या खेलो इंडिया के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया हो या जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों व खेल प्रतियोगिताओं में कोई स्थान अर्जित किया हो।

गदपुरी (पलवल) में एडवेंचर एवं अरावली नेचर स्टडी कैम्प-

विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा राज्य के पीएम श्री विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय युवा एडवेंचर इंस्टिट्यूट गदपुरी (पलवल) में पाँच दिवसीय एडवेंचर एवं अरावली नेचर स्टडी कैम्प्स का आयोजन दो बैचों में दिनांक 3 से 7 अक्टूबर, 2023 (प्रथम बैच) तथा दिनांक 9 से 13 अक्टूबर, 2023 तक (दूसरा बैच) किया गया, जिनमें राज्य के 124 पीएम श्री स्कूलों से कुल 248 छात्र छात्राओं ने भाग लिया। शिविर के दौरान विद्यार्थियों ने विभिन्न एडवेंचर गतिविधियों में भाग लेने के साथ साथ आपदा प्रबंधन, प्राथमिक सहायता, शारीरिक क्रियाओं यथा योग, प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण भी लिया। विभिन्न एडवेंचर गतिविधियों में तीरंदाजी, शूटिंग, रॉक क्लाइंबिंग, रैपलिंग, टायर वाल, बर्मा ब्रिज, कमांडो नैट सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र रही। इन सबके अतिरिक्त विद्यार्थियों को दिल्ली के लाल किला, कुतुब मीनार, लोटस टेंपल आदि ऐतिहासिक व पुरातात्विक महत्त्व के स्थलों का भ्रमण कराया गया तथा अगले दिन विद्यार्थियों को ताज नगरी आगरा में ताजमहल, लाल किला के भ्रमण उपरांत रात्रि विश्राम मथुरा में भारत स्काउट एंड गाइड के प्रशिक्षण सेंटर पर ही रहा। इस अवसर पर प्रतिदिन विद्यार्थियों द्वारा कैंपफायर का आयोजन भी किया गया। चौथे दिन मथुरा और वृंदावन के विभिन्न आध्यात्मिक स्थलों का भ्रमण करते हुए छात्रों ने वहाँ के भवनों की अद्भुत वास्तुकला और ऐतिहासिक धरोहर के बारे में जानकारियाँ हासिल कीं तथा अरावली पर्वतीय क्षेत्र की प्रकृति, वनस्पतियों व जन-जीवन बारे सीखा। इन कैम्पों के आयोजन की जिम्मेदारी नोडल अधिकारी के रूप में जिला परियोजना समन्वयक पलवल को दी गई थी।

drpradeeprathore@gmail.com

मेरा नाम मनिका है। मैं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, चंदना, कैथल में 11वीं कक्षा की इतिहास की छात्रा हूँ। हमारा भ्रमण कार्यक्रम 14 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक था। हमारे रहने और खाने की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। हमने जल महल, हवा महल, गुलाबगढ़, बिरला तारामंडल आदि देखा। यह भ्रमण मेरे जीवन का यादगार अनुभव रहा। बिरला तारामंडल में हमने तारों का शो देखा, जिसे देखकर लगा जैसे मैं तारों की दुनिया पहुँच गई। गुलाबगढ़ में बहुत आनंद उठाया। ऊँट की सवारी की, घोड़े की सवारी की। मुझे बहुत अच्छा लगा । मुझे इतिहास के बारे में बहुत कुछ जानने का अवसर मिला। आमेर का किला और जयगढ़ का किला भी देखा। जो हम किताबों में पढ़ते हैं, वह हमने वहाँ जाकर देखा। राजाओं और रानियों के बारे में जाना। गाइड ने और अध्यापकों ने सभी जगह के बारे में जानकारी दी और उनके इतिहास को बताया। जल महल में मैंने राजस्थानी पोशाक पहनी। मुझे यह भ्रमण सदैव याद रहेगा।

मेरा नाम अजय है। मैं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नंदौरी, फतेहाबाद में कक्षा ग्यारहवीं का छात्र हूँ। मुझे इस भ्रमण से इतिहास के बारे में बहुत कुछ जानने का अवसर मिला। हमने आमेर का किला दिखा जो बहुत खूबसूरत था। हवा महल, जल महल, जयगढ़ किला भी देखा। मुझे सबसे ज्यादा हवा महल पसंद आया। वह एक राजमुकुट की भाँति दिखाई दे रहा था। इसमें बहुत खिड़कियाँ बनी हुई थीं। सीढ़ियाँ बहुत छोटी बनी हुई थीं, जिनसे ऊपर की मंजिल पर जाना काफी मज़ेदार था। गाइड ने हमें सभी स्थानों का इतिहास बताया। मुझे इस टूर पर जाकर बहुत अच्छा लगा। शिक्षा विभाग को इस तरह के भ्रमण का आयोजन करते रहना चाहिए। जयपुर शहर को देखकर बहुत अच्छा लगा। जयगढ़ किले में सबसे बड़ी तोप भी देखी। इस तोप के बारे में जानकारी प्राप्त की। यह भी पता चला कि इस तोप का टेस्ट फायरिंग कब किया गया। इस भ्रमण का अनुभव मेरे जीवन का सबसे अच्छा अनुभव रहा।

मेरा नाम गर्व है। मैं राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खैरी, कुरुक्षेत्र का छात्र हूँ। मुझे इस भ्रमण पर जाकर इतिहास के बारे में जानने का मौका मिला। मैंने बहुत उत्सुकता से जयपुर के किले के बारे में जानना चाहा। हमें हवा महल, जल महल, आमेर किला आदि दिखाए गए। मुझे जल महल और जयगढ़ का किला बहुत पसंद आया। जयगढ़ किले में सबसे बड़ी तोप देखी। जल महल को देखकर बहुत अच्छा लगा। ऐसा लगा जैसे वह पानी के ऊपर बना हुआ है। वहाँ पर सभी बच्चों ने राजस्थानी पोशाक में फोटो खिंचवाई। गुलाबगढ़ में हमने घोड़े और ऊँट की सवारी की। मुझे वहाँ रहने का प्रबंध भी बहुत अच्छा लगा। हमें एक होटल में ठहराया गया। वहाँ सभी के साथ रहना बहुत अच्छा लगा।

छात्राओं ने किए धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र के दर्शन

प्रदेश भर की 6,600 छात्राओं को शैक्षणिक यात्रा का मिला अवसर

डॉ. ओमप्रकाश कादयान

राजकीय विद्यालयों में पढने वाले सामान्य, गरीब परिवारों के बच्चे कहाँ घूम पाते हैं? अपनी नानी के घर के अलावा कभी-कभी शादी ब्याह में या किसी-किसी को रिश्तेदारी में जाने का शायद मौका मिल पाता होगा। शिक्षक होने के नाते हमें ये पता है कि बहुत से बच्चों को तो पड़ोसी गाँवों में जाने का अवसर भी प्राप्त नहीं होता, खासकर लड़कियों को घर से स्कूल, स्कूल से घर। स्कूल में कोर्स की किताबें, घर में होमवर्क या थोड़ा बहुत घर का काम। लम्बी-लम्बी यात्राएँ, वे भी अपने सहपाठियों के साथ, यह कहाँ हो पाता है? किन्तु ये एक पूरे देश के सभी राज्यों के शिक्षा विभाग के लिए अनुकरणीय, विचारणीय, प्रेरणा से कम नहीं कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा के राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को लम्बी-लम्बी उपयोगी, ज्ञानवर्धक, शैक्षणिक यात्राएँ करवाता है। शिक्षा विभाग का उद्देश्य है कि विद्यार्थी कोर्स के अलावा समाज, देश से सीधे तौर पर जुड़ें। वे प्रकृति के विभिन्न रूपों से परिचित हों, उसका सम्मान व संरक्षण करना सीखें। वे अपने देश की, अपने राज्य की संस्कृति से, कला से परिचित हों। वे ऐतिहासिक, धार्मिक, पुरातात्विक स्थलों को देखें-जानें, आकर्षक पर्यटन स्थलों को निहारें। विभिन्न भौगोलिक स्थितियों, जंगल, मरुस्थल को जानें व बौद्धिक स्तर पर मज़बूत हों तथा देश के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दें। इसलिए शिक्षा विभाग विद्यार्थियों को अनेक यात्राएँ करवाता है। अब की बार शिक्षा विभाग ने सोचा कि दूसरे राज्यों की लम्बी यात्राओं के साथ-साथ क्यों न विद्यार्थियों को 'अपना राज्य' जानने, समझने का अवसर दिया जाए और इसी योजना के तहत विद्यालयों में पढ़ रहीं छात्राओं के लिए धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र को जानने, घूमने, देखने का मौका दिया गया।

शिक्षा विभाग की कार्यक्रम अधिकारी ने बताया कि जब विद्यार्थी अपनी कक्षा से, स्कूल या घर-गाँव से बाहर निकलता है तो कोर्स की पुस्तकों के अलावा बहुत कुछ ऐसा सीखता है जो उसे उम्र भर काम आता है। यात्राओं के अनुभव उसे अनुभवी, ज्ञानवान, सामाजिक बनाते हैं। विभिन्न विद्यालयों के कई जिलों के बच्चे जब आपस में मिलते हैं तो एक दूसरे से जुड़ते हैं। एक दूसरे की संस्कृति, खान-पान, लोक भाषा, रीति-रिवाजों से, स्वभावों से परिचित होते हैं। हमारा उद्देश्य है कि बच्चे अपने राज्य को अच्छे से जानें, अपनी आँखों से देखें। बच्चों के

सर्वांगीण विकास के लिए ये जरूरी है।

अबकी बार के कार्यक्रम में तय किया गया कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को कुरुक्षेत्र दिखाया जाए, इसीलिए प्रत्येक जिले सें 300 प्रतिभाशाली छात्राएँ चुनकर यात्रा पर ले जाना सुनिश्चित हुआ। वो भी सातवीं से नौवी कक्षा की उन छात्राओं को जिन्होंने परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त किए हैं। ये अच्छा रहा कि इस यात्रा में कक्षा सातवीं व आठवीं की छात्राओं को शामिल किया गया, क्योंकि छोटी कक्षाओं की बारी अक्सर बहुत कम ही आती है। शुरुआत की गई सिरसा जिले से। दूसरी बारी थी फतेहाबाद की। इसी क्रम में जिले वार यात्राएँ जारी रहीं। यात्रा की पूरी जानकारी के लिए किसी एक जिले के साथ मुझे जाना था, सो मैं फतेहाबाद की टीम के साथ गया। शनिवार, 2 सितम्बर को सुबह सात बजे फतेहाबाद के जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय से हमारी यात्रा आरम्भ हुई। शिक्षा विभाग में कार्यारत प्राचार्य विजय कुमार ने छात्राओं की बस को हरी झंडी दिखाकर कुरुक्षेत्र के लिए रवाना किया। अलग-अलग खंड से आई सभी छह बसों को उकलाना से आगे एक होटल पर रुकवाया गया तथा बच्चों व शिक्षकों के लिए खाने का प्रबंध किया गया। कुछ घंटों के सफर के बाद कुरुक्षेत्र पहुँचे तो कुरुक्षेत्र के शिक्षा वभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने तिलक लगाकर सभी का स्वागत किया। खाना तैयार था, सभी ने खाना खाया।

खाना खाने के उपरान्त सभी को बस में बिठाकर करनाल ले जाया गया। यहाँ बने एक म्यूजियम में भैंस-गायों की विभिन्न नस्लों के बारे में अधिकारी ने बताया तथा फाइबर की बनी गायों की प्रतिमूर्तियाँ दिखाईं। यहाँ आकर छात्राओं तथा शिक्षकों को पता चला कि गायों की नस्लें इतनी ज्यादा होती हैं। यहाँ से महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ जुटाकर हम कुरुक्षेत्र की ओर चल दिये। चलने से पूर्व यहाँ गेट पर हम सभी का ग्रुप फोटो लिया। शाम को सभी को ब्रह्मसरोवर घुमाया गया। कहा जाता है कि ब्रह्मसरोवर वाले स्थान पर ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की थी, इसलिए इसे पवित्र स्थान माना जाता है। सूर्य ग्रहण के मौके पर यहाँ श्रद्धालुओं की भारी भीड़ होती है। महाभारत काल व युद्ध से जुडे होने के कारण यहाँ अन्तरराष्ट्रीय स्तर का गीता जयन्ती उत्सव भी मनाया जाता है। मान्यता है कि ब्रह्मसरोवर में डुबकी लगाने से हजारों अश्वमेध यज्ञों के बराबर पुण्य प्राप्त होता है। माना यह भी जाता है कि कौरव-पांडवों के पूर्वजों ने पहली बार इस तालाब की खुदाई करवाई थी। एक गाइड ने बच्चों को बताया कि महाभारत के युद्ध में पांडवों की

जीत के बाद युधिष्ठिर द्वारा एक विजय स्तम्भ बनाया गया था। इसके किनारे ही एक द्रोपदी कूप है। सरोवर के उत्तर तट पर सर्वेश्वर महादेव मन्दिर है। ब्रह्मसरोवर की चौड़ाई करीब 1800 फीट तथा कहीं-कहीं इसकी गहराई 45 फीट है। ये एशिया के कुछ बड़े सरोवरों में से एक है। छात्राओं को ब्रह्मसरोवर की जानकारी दी तथा वहाँ घुमाया गया। सरोवर के पूर्वी भाग में स्थित देश के प्रसिद्ध कलाकार राम सुथार द्वारा बनाया गया 35 फुट ऊँचा, 45 टन वज़नी कृष्ण-अर्जुन का काँस्य का विशाल रथ दिखाया गया। यहाँ एक ग्रुप फोटो भी लिया। बच्चों को यहाँ घूमने के लिए करीब दो घण्टे का समय दिया गया। यहाँ बच्चों ने जहाँ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ जुटाईं, वहीं पर यात्रा व मौसम का भरपूर आनंद उठाया।

अगले दिन सुबह-सुबह ज्योतिसर के लिए रवाना हुए। वहाँ जाकर बच्चों को वह स्थान दिखाया गया जहाँ महाभारत युद्ध से पहले श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया तथा विराट रूप में दर्शन करवाए। वहाँ स्थित प्राचीन वट वृक्ष के बारे में मान्यता है कि ये उसी वट वृक्ष का जीवित हिस्सा है जिसके पास भगवान कृष्ण ने विराट रूप दिखाया था। बच्चों को ज्योतिसर सरोवर, यहाँ बने कई मन्दिर तथा 33 टन वजनी तथा 40 फीट ऊँची कृष्ण के विराट रूप की मूर्ति दिखाई गई। उसके बाद बच्चों को कल्पना चावला तारा मण्डल ले जाया गया। हरियाणा स्टेट काउंसिल फार साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी द्वारा कुरुक्षेत्र -पेहवा रोड़ पर कल्पना चावला मेमोरियल प्लेनेटोरियम स्थापित है। बच्चों ने यहाँ खगोलीय विज्ञान की जानकारी प्राप्त की। कौन-सी दिशा में कौन-सा तारा व ग्रह दिखाई देता है, ये सब जानकारियाँ यहाँ मिलती हैं। विज्ञान शिक्षा देने, कल्पना चावला मण्डल देखने, पार्क में घूमने के बाद दोपहर के खाने के लिए वापिस रेणुका सदन आ गए। खाना खाकर, थोड़ा आराम करके फिर बच्चे तैयार थे। यहाँ से पैनोरमा तथा श्रीकृष्ण संग्रहालय नज़दीक ही हैं। यहाँ हम सभी पैदल ही आ गए। कुरुक्षेत्र

जिला शिक्षा अधिकारी के दफ्तर से आए स्टाफ सदस्यों ने आगे जाकर पैनोरमा की टिकट बुक करवा ली। हम सब वहाँ पहुँचे तो टिकट तैयार थी। कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केन्द्र में जमीन के तल और बेलनाकार दीवारों के साथ पहली मंज़िल में दो अलग-अलग प्रकार के प्रदर्शन होते हैं। पैनोरमा के अन्दर घुसते ही पर्यटकों को विज्ञान की जानकारियाँ रोचक, उत्साह, मनोरंजन के तरीके से मिलती हैं। बच्चों को यहाँ खेल-खेल में विज्ञान सीखने का मौका मिला तो ऊपर वाली मंज़िल में महाभारत के युद्ध को सजीव ढंग से दिखाया गया है। लड़ाई में चल रही तलवारों, गदाओं, भालों की आवाज़ें, चिल्लाने की आवाज़ें तथा घोड़ों की टापों की आवाजें तथा फाइबर की बनी मूर्तियाँ, दीवारों पर बने चित्र युद्ध की शानदार झलक प्रस्तुत करते हैं। बच्चों व शिक्षकों ने दो घण्टे तक यहाँ बहुत कुछ देखा, सीखा, महसूस किया। इसके बाद सभी छात्राओं को पास में स्थित श्रीकृष्ण संग्रहालय दिखाया गया। भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित इस संग्रहालय को कुरुक्षेत्र विकास प्राधिकरण ने 1987 में बनवाया था। उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति श्री आर. वैंकटरमन ने किया था। इस संग्रहालय में श्रीकृष्ण के बारे में अधिकाधिक जानकारियाँ, मूर्तियों, झाकियों, चित्रों, पाण्डुलिपियों, शिलालेखों, कलात्मक वस्तुओं के माध्यम से दी गई हैं। यहाँ श्रीकृष्ण को एक दार्शनिक, महान योद्धा, सच्चे प्रेमी, कुशल राजनेता के रूप में दिखाया गया है। बच्चों ने यहाँ आकर जहाँ श्रीकृष्ण के जीवन के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कीं, वहीं बेहतरीन, आकर्षक कला से रू-ब-रू हुए।

उस शाम को बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम था। पहले बच्चों को समय पर खाना खिलाया गया। उसके बाद आरम्भ हुआ धूम-धाम से उत्साह से भरा कार्यक्रम। इस कार्यक्रम की खास बात यह रहीं कि राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मोहम्मपुर रोही, फतेहाबाद की एक छात्रा डोली का जन्म-दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। सभी अधिकारियों ने डोली को शुभकामनाएँ दीं। दूसरा यह कि फतेहाबाद के जिला शिक्षा अधिकारी दयानन्द सिहाग ने टीवी स्क्रीन पर सभी अधिकारियों, शिक्षकों व बच्चों से लाइव बात की। दयानन्द सिहाग ने अधिकारियों का धन्यवाद किया तथा शिक्षकों व बच्चों का उत्साह बढ़ाया।

उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग द्वारा देश-भर में विद्यार्थियों की यात्राएँ करवाने के पीछे बड़ा लक्ष्य है। इन यात्राओं से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। इनमें आत्म-विश्वास मजबूत होता है। इन यात्राओं से जो ज्ञान व अनुभव प्राप्त होता है इससे उन्हें उत्साह के साथ जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। ये यात्राएँ हर कठिनाई से जूझना व दूसरों का सम्मान करना, मिल-जुल कर रहना सिखाती हैं। उन्होंने कहा कि ये यात्राएँ विभाग की ओर से प्रतिभाशाली बच्चों का इनाम हैं।

अगले दिन सुबह-सुबह सभी थानेसर स्थित शक्ति पीठ भद्रकाली मन्दिर देखने गए। ये शक्ति पीठ देश

के 52 पवित्र शक्ति-पीठों में से एक है जिसकी मान्यता देशभर में है। मान्यता है कि पाण्डवों ने श्रीकृष्ण के साथ यहाँ युद्ध से पहले पूजना-अर्चना की थी तथा जीत के बाद अपने रथों के घोड़ों को यहाँ दान कर दिया था। ये मन्दिर देखने व माता के दर्शनों के बाद सभी शेख-चेहली (चिल्ली) मकबरे की यात्रा पर गए। ये मात्र एक मकबरा नहीं है। किलानुमा विशाल मकबरे में दो पुरातत्त्व संग्रहालय भी हैं। एक बहुत बड़ा हरा-भरा पार्क है। इसकी छत से चारों तरफ के अद्भुत नज़ारे दिखते हैं। प्रसिद्ध सूफी कवि शेख चेहली की याद में दाराशिकोह ने लगभग 1650 ई. में बनवाया था। यह मकबरा दाराशिकोह के पठन-पाठन और आध्यात्मिक ज्ञान का भौतिक प्रतीक था। स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना, हर्ष के टीले के पूर्वी किनारे पर बना है। दूर से देखने पर ये कुछ-कुछ ताजमहल जैसा लगता है। बताया जाता है कि शेख चेहली कुरुक्षेत्र के जाने-माने विद्वान जलालुद्दीन साबरी से मिलने ईरान से यहाँ आए थे, फिर वे इसी भूमि के होकर रह गए।

बच्चे दो संग्रहालयों का अवलोकन कर, महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ कॉपियों में नोट करके छत पर चढ़ गए। छत पर बनी कलात्मक छतरियाँ, चारों ओर सुन्दर नज़ारे, ठंडी हवा सुकून देती है। बच्चों ने यहाँ ढेर सारी सैल्फियाँ लीं, फोटो खींचे, फिर वापस रेणुका सदन आ गए।

आज विदाई समारोह था। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कुरुक्षेत्र की नगराधीश हरप्रीत कौर तथा जिला शिक्षा अधिकारी ने सभी बच्चों व शिक्षकों को पुरस्कार बाँटे, नगराधीश ने शिक्षा विभाग की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ये बहुत बेहतरीन प्रयास है। ये यात्राएँ विद्यार्थियों को अनुभवी, ज्ञानवान बनाती हैं तथा जीवन में मेहनत से आगे बढ़ने लिए प्रेरित व उत्साहित करती हैं। उन्होंने कहा कि ये बच्चे खुशनसीब हैं जो इस यात्रा पर आए हैं। ये सभी शिक्षा विभाग की सकारात्मक सोच से सम्भव हो सका है। इसके लिए शिक्षा विभाग, पंचकूला के अधिकारी बधाई के पात्र हैं।

जिला शिक्षा अधिकारी रोहताश वर्मा ने सभी बच्चों को शुभकामनाएँ दीं। उसके उपरान्त सभी बच्चे अपनी-अपनी बसों में बैठकर मधुर स्मृतियों के साथ वापिस अपने घर की ओर चल दिए।

ये यात्रा एक ज़िले की नहीं है। शिक्षा विभाग ने बारी-बारी सभी जिलों के 300-300 छात्राओं को ये यात्राएँ करवाईं। करीब दो माह तक चली इन शैक्षणिक यात्राओं में हरियाणा-भर से करीब 6600 छात्राओं ने यात्रा की। ये शिक्षा विभाग का बहुत बड़ा, सराहनीय, उपयोगी, गज़ब का प्रयास है।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

विज्ञान अवधारणाओं को रोचक ढंग से सिखाया पुष्पा गुजराल साइंस सिटी ने

सुनील अरोरा

हरियाणा सरकार द्वारा प्रदेश के सभी 22 जिलों के सरकारी स्कूलों के बच्चों को स्वर्ण मंदिर व वाघा बॉर्डर अमृतसर, पुष्पा गुजराल-विज्ञान शहर, कपूरथला, आर्ट गैलरी, रॉक गार्डन, रोज गार्डन व सुखना झील का चार रातों व चार दिन का शैक्षणिक भ्रमण करवाया गया। इसमें खास बात यह थी कि बच्चों या उनके अभिभावकों से कोई भी राशि नहीं ली गयी। बच्चों को बहुत ही साफ व उच्च स्तर के होटल में ठहराव करवाया गया। ये बात मैं इसलिए कह पा रहा हूँ क्योंकि मैं स्वयं भी इस शैक्षणिक भ्रमण में बच्चों के साथ गया था। सुबह-सुबह जब आप हरिमंदिर साहिब में माथा टेकते हो तब आपको जो रुहानी शांति मिलती है, उसे आप शब्दों में बयान नहीं कर सकते। शाम को जब आप वाघा बॉर्डर पर बीटिंग रिट्रीट देखते हैं तो बच्चों में अपने देश के प्रति समर्पण, देश-प्रेम की भावना पैदा होती है। सामने पड़ोसी देश पाकिस्तान, इधर हमारे फौजी भाइयों का जोश देख कर बच्चों में जो देश-प्रेम का भाव पैदा होता है, वह गज़ब का होता है। रात शानदार होटल में ठहराव के बाद हम सब सुबह पुष्पा गुजराल विज्ञान शहर पहुँच गए।

ये सब एक सपना साकार होने जैसा लग रहा था। यहाँ बच्चों ने चाय नाश्ता किया और चल दिये कुदरत के छिपे राज़ से उठता पर्दा देखने। विज्ञान संग्रहालय और विज्ञान केंद्र असंख्य लोगों को अनुभव करने और विज्ञान सीखने में मदद कर रहे हैं। अक्सर ये जिज्ञासु दिमागों की ज्ञान-पिपासा को शांत करते हैं और उनकी रचनात्मकता को उजागर करते हैं। पुष्पा गुजराल साइंस सिटी (पीजीएससी) कपूरथला में देश का सबसे बड़ा विज्ञान शहर है। इसका नाम पूर्व प्रधानमंत्री आईके गुजराल जी की माता जी श्रीमती पुष्पा गुजराल जी के नाम पर रखा गया है। भारत-सरकार और पंजाब-सरकार की यह संयुक्त परियोजना है जोकि पंजाब में जालंधर-कपूरथला रोड पर 72 एकड़ भूमि पर स्थापित है। 20 मार्च, 2005 को इस साइंस सिटी के द्वार जनता के लिए खोल दिए गए थे।

जैसे ही हमने विज्ञान शहर में प्रवेश किया, वहाँ स्थापित अद्वितीय आकार की इमारतों को देख कर बच्चों का अचंभित होना स्वाभाविक था। हमारी नज़र एक ग्लोब आकार की इमारत पर पड़ी, बहुत ही सुंदर इमारत। हमें जानकारी दी गयी कि इस इमारत पर 25 लाख कंप्यूटरों पर डिज़ाइन हुई टाइल्स लगी हैं। एक विषय पर एक पूरी गैलरी बनी थी। उसकी इमारत का आकार ही उसके विषय की जानकारी दे रहा था। विज्ञान यात्रा हॉल की इमारत का आकार एक अंतरिक्ष यान जैसा था। साइंस वॉयेज हॉल में 328 व्यक्ति क्षमता वाला विशाल अंतरिक्ष थियेटर है। इस थियेटर में 23 मीटर व्यास की स्क्रीन है। जब आप यहाँ फ़िल्म देखते हैं तो ये स्क्रीन आपको एक ऐसा अनुभव देती है आप को ऐसा प्रतीत होता है जैसे आप उस घटना स्थल पर ही मौजूद है। आप एक अलग ही आनन्द में खो जाते हैं।

यहाँ हमने एक फ्लाइट सिमुलेटर के माध्यम से एक फ्लाइट का अनुभव किया जिसमें हम ग्रहों और तारों

के पास से गुज़र रहे थे। बच्चों को देखकर हम ये समझ पा रहे थे कि वे उस दिन विज्ञान को महसूस ही नहीं कर रहे बल्कि जी रहे हैं। वे बहुत खुश थे। यहीं हमने भूकंप सिमुलेटर का भी अनुभव किया जोकि रियक्टर स्केल 6.5 तक का भूकम्प का अनुभव करवा सकता था, ऐसा हमें वहाँ बताया गया। धरती पर अगर जन्नत देखनी हो तो आप इस केंद्र पर बने डिजिटल प्लैनेटेरियम सिस्टम में जा कर तारामंडल ,चन्द्र कलाएँ, रात को तारों की स्थिति, सौरमंडल की गति का अनुभव कर सकते हैं।

स्पेस और एविएशन गैलरी में उपग्रहों के थ्री-डी मॉडल की सुंदरता हमें अपनी तरफ मोह रही थी। सुंदरता के साथ-साथ हमें उपग्रहों के विज्ञान को भी समझा रही थी। ये बेजोड़ मेल था बच्चों की उत्सुकता होती है कि एस्ट्रोनॉट स्पेस में कैसे रहते हैं? इसकी जानकारी देता एक सेक्शन-'लिविंग इन स्पेस' बनाया गया है। सरकार ने इस बार चंद्रयान-3 की चंद्रमा पर लैंडिंग का लाइव शो स्कूल में बच्चों को दिखाया। ये भारत के लिए गौरव का क्षण था। ऐसा पहली बार हुआ था कि बच्चों ने स्कूल में बैठ कर अपने अध्यापकों के साथ ऐसा नज़ारा देखा हो। इस साइंस सिटी में चंद्रयान-1 की विस्तृत जानकारी देता एक मॉडल भी था। बच्चे आसानी से पहचान गए थे और समझ भी पा रहे थे, क्योंकि उन्होंने चन्द्रयान-3 की लैंडिंग लाइव देखी हुई थी। एक मशीन ऐसी थी जो आपकी आयु व आपका भार हर ग्रह पर कितना है, ये बताती थी। बच्चे तो बस इस मशीन से आगे जाने के लिए तैयार ही नहीं थे। आगे थ्री-डी थिएटर था, उसमें बच्चे क्या वयस्क भी सब मंत्रमुग्ध हो गए। अजब-गजब जीव स्क्रीन से हमारी ओर आते दिखाई देते। बस पूछिये मत हम सब ने अपना दिल थाम रखा था। पर बहुत ही यादगार क्षण था। वहाँ एक लेज़र शो भी था, वह भी हम सभी को खूब पसंद आया।

अगली थी हेल्थ गैलरी। 12 फ़ीट का मानव हृदय का मॉडल आपका स्वागत करता है। जैसे ही आप हृदय में प्रवेश करते है तो वहाँ आप जान पाते हैं कि हृदय कैसे रक्त को पंप करता है। ये अद्भुत अनुभव था। बच्चे किताबों में जो पढ़ते थे वह सब हकीकत में देख रहे थे। एक पारदर्शी मानव संरचना का मॉडल शरीर के सभी भाग व उनके कार्य की कहानी बता रहा था। ये शानदार था। वहाँ एक साइकल थी जो पैडल लगाने से आपके हृदय की गति व आपकी ईसीजी पर क्या प्रभाव पड़ रहा था, उसे बता रही थी। ये एक अलग ही प्रकार अनुभव था।

आगे जाने पर हम पहुँच गए बायोटेक्नॉलजी गैलरी में। ये गैलरी मेडिकल के विद्यार्थियों के लिए तो जन्नत थी। उनके हर प्रश्न का उत्तर देती ये गैलरी जेंटिक्स के हर कांसेप्ट के वैज्ञानिक राज खोल रही थी।

अब तक की सबसे मनमोहक, सबसे मज़ेदार सबसे अलग गैलरी जिसमें बच्चों ने खूब आनन्द लिया।

वो गैलरी थी साइबर स्पेस व वर्चुअल रियलिटी गैलरी। इस गैलरी में बच्चों ने अपनी ज़िंदगी के सबसे यादगार पल जिये। वह अनुभव जो उन्होंने कभी प्राप्त नहीं किया था, वह किया। इस गैलरी में कंप्यूटर द्वारा जनित वर्चुअल गेम्स थीं। एक गेम में एक वर्चुअल लाइट स्विच था जिसमें हमने अलग-अलग रंगों के प्रकाश का उपयोग किया व एक म्यूज़िकल पैटर्न बनाया। मैं अचंभित था, विज्ञान के ऐसे-ऐसे खेल देखकर। इसमें एक ऐसी स्क्रीन थी जिसके सामने जवान खड़ा बूढ़ा दिखता था और बूढ़ा जवान। विज्ञान का कमाल था, विज्ञान का धमाल था।

अगली थी मेरी पसंदीदा बेसिक विज्ञान पर आधारित गैलरी, जिसका नाम था 'फन साइंस गैलरी'। इसमें 70 के आसपास मॉडल थे, जो बेसिक विज्ञान पर आधारित थे जैसे प्रकाश का अपवर्तन, प्रकाश का परावर्तन, प्रकाश का फैलाव, ध्वनि तरंग, प्राथमिक रंग, कार्य ऊर्जा पर आधारित गतिविधियाँ, जो बच्चों में एक अलग सोच पैदा कर रही थीं, उनके सोचने का तरीका बदल रही थीं और उनकी परिकल्पना को अलग रंग दे रही थीं। यह सब अद्भुत था।

इस पार्क की सबसे खास जानकारी तो हमें सबसे अंत में दी गयी कि इस पार्क में अपनी विद्युत उत्पन्न करने के विभिन्न प्लांट थे, जिनमें हाइड्रो पावर प्लांट, सोलर पावर प्लांट, बायो प्लांट आदि शामिल थे। इससे यहाँ 20 किलोवाट विद्युत पैदा की जाती है, यानी यहाँ अपनी बनाई विद्युत का उपयोग होता है। इसके अलावा यहाँ पर एक डिफेंस गैलरी है जिसमें विजयन्ता टैंक, मिग 23 एयरक्राफ्ट, एंटी एयरक्राफ्ट गन व तोरपडो दिखाई देते हैं। अंत में हमने देखा 2.63 हेक्टेयर में बना डायनोसोर पार्क। इसके साथ बच्चों के लिए किड्स साइंस पार्क बना हुआ है। इस पार्क में बच्चों ने मस्ती के साथ विज्ञान के आधारभूत सिद्धान्त पर बने झूले देखे व उनका आनन्द लिया।

शाम हुई। गैलरी बन्द होने लगी। हमें कोई जल्दी नहीं थी। रात यहीं गुज़ारनी थी। कोई फिक्र नहीं, हम खुश थे कि हम आज पुष्पा गुजरात साइंस सिटी में थे। यह दिन जीवन का सबसे दिलचस्प दिन था। सरकार का यह कदम बहुत ही सराहनीय है। ये विज्ञान की तरफ हमारे बढ़ते कदमों में से सबसे बढ़िया कदम है।

पीजीटी, रसायन विज्ञान
सार्थक राजकीय विद्यालय, सैक्टर-12ए, पंचकूला

यादगार रहेगी जैसलमेर की नेचर स्टडी यात्रा

पीएम श्री विद्यालयों के 248 विद्यार्थियों ने की जैसलमेर की डैज़र्ट नेचर स्टडी यात्रा

डॉ. ओमप्रकाश कादयान

जिस तरह से हरे-भरे जंगलों से लदे पहाडों, नदी, नालों, झरनों, हरित वादियों, घाटियों की यात्रा का आनन्द है, ग्लेशियरों को नज़दीक से निहारने का रोमांच है, समुद्री लहरों को नृत्य करते हुए देखना तथा समुद्री यात्राओं का अपना मज़ा है, उसी तरह रेत के समुद्र यानी मरुस्थलीय धोरों की यायावरी करने का अलग ही आनन्द है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग कई वर्षों से सरकारी विद्यालयों में पढ़ रहे सामान्य या गरीब परिवारों के प्रतिभाशाली बच्चों के सपने साकार करने तथा उनके सर्वांगीण विकास करने के लिए उन की लम्बी-लम्बी यात्राएँ करवा कर पूरे देश के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। शिक्षा विभाग हर वर्ष कई हजार विद्यार्थियों को मनाली, डलहौजी, बाघा-बॉर्डर, भोपाल, मोरनी, मल्लाह, टिक्करताल, गढ़पुरी, पंचमढ़ी, केरल आदि स्थानों की यात्राएँ अपने खर्चे पर करवाता आया है, जिनका फायदा विद्यार्थियों को सीधे तौर पर मिल रहा है। अब की बार शिक्षा विभाग ने कुछ नया व अलग सोचते हुए दार्जीलिंग, उड़ीसा व जैसलमेर की यात्राओं की योजना बनाई। इनमें विद्यार्थियों को राजस्थान के जैसलमेर व आसपास की यात्रा करवाना अलग व बेहतरीन सोच है।

यह यात्रा जंगलों, समुद्री तटों, पहाड़ों, ग्लेशियारों से अलग है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति, सांस्कृतिक सम्पदा प्राकृतिक माहौल अन्य यात्राओं से हटकर है। प्रकृति अध्ययन के हिसाब से अति महत्त्वपूर्ण है। इसके अलावा यहाँ का गौरवमय इतिहास, बुलन्द कलात्मक हवेलियाँ, आकर्षक छतरियाँ, भारत-पाक युद्ध की स्मृतियाँ समेटे संग्रहालय हैं। इसलिए जैसलमेर व इसके आसपास के इलाकों की यात्रा के कई मायने हैं। यहाँ प्रकृति के अलग रूप देखने को मिलते हैं। हरियाणा के पीएम श्री सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए 25 से 31 अक्टूबर तथा 2 से 8 नवम्बर तक दो ग्रुपों में डैज़र्ट नेचर स्टडी के लिए जैसलमेर जाने की योजना बनाई। हर ग्रुप में ग्यारह जिलों के एक सौ चौबीस विद्यार्थी (छात्र-छात्राएँ) शामिल किए गए।

मैंने अपना बैग तैयार किया और निर्धारित तिथि 25 अक्तूबर को सिरसा के विद्यालय में पहुँच गया, जहाँ से आगे की यात्रा शुरू होनी थी। शाम को छह बजे तक ग्यारह ज़िलों के विद्यार्थी अपने शिक्षकों के साथ यहाँ पहुँच गए। कई लम्बी यात्राओं के मेरे साथी प्रवीन कम्बोज (सिरसा) को आगे पहुँचा देख खुशी हुई। कुछ देर बाद सुखदेव सिंह ढिल्लों, डीओसी-डॉ.इन्द्रसेन (सिरसा) तथा एपीसी विनोद कुमार भी पहुँच गए। इन सबसे कई दिनों बाद मुलाकात हुई। विद्यालय प्रशासन की खाने-पीने की व्यवस्था अच्छी थी। यहाँ सभी का रजिस्ट्रेशन हुआ। कैम्प के इंचार्ज सुखदेव ढिल्लों थे। इन्होंने कहा कि आपने बच्चों व शिक्षकों को संबोधित करना है। अपने कुछ अनुभव साँझा करने हैं। हमने बच्चों को आवश्यक बातें बताते हुए जरूरी निर्देश भी दिए ताकि सब की यात्रा सुगम व आनन्दमयी हो सके। सभी बसों में सवार होकर रात को 9 बजे जैसलमेर की ओर रवाना हुए। बच्चों ने कुछ गाने गाए, कुछ देर अन्त्याक्षरी खेली, फिर धीरे-धीरे सोते गए। रात को ड्राइवर ने चाय के लिए बस रोकी फिर चल दिए। आधी रात के आसपास हमारी बस भारत माला रोड़ पर चढ़ गई। व्यापार के लिए बनायी गयी ये सड़क कहीं फोर लेन है तो कहीं सिक्स लेन। इस सड़क पर यात्रा करने का अपना आनन्द है। हम सूर्योदय के समय पोखरण के इलाके में एक ढाबे पर रुके, हरियाली कम होती जा रही थी। पोखरण इलाके में कहीं पथरीली, तो कहीं बालू जमीन थी। खेतों की जगह असंख्य झाड़ियाँ थीं। कुछ पेड़ जांटी के थे। रास्ते में पत्थरों के बने मकानों के आसपास नीम तथा कुछ अन्य पेड़ भी दिखाई दे रहे थे। भेड़-बकरियों के झुंड, गाय आदि कुछ मवेशी दिखाई दिए। यहाँ गोरैया काफी संख्या में बची हुई थीं, यह देखकर मन को अच्छा लगा। कुछ अन्य पक्षी भी दिखाई दिए। कई जगह मोर भी दिखे। ये सभी विद्यार्थियों के नेचर स्टडी का हिस्सा थे। रास्ते में सड़क के दोनों ओर कहीं-कहीं सेना के शिविर थे। अप्रैल से सितम्बर तक इन धोरों में कितनी गर्मी होती होगी। सूरज निकलने के साथ ही सूरज की गर्मी से बालू तपने लगती है। अपना घर, गाँव, बीवी-बच्चे, माता-पिता, दोस्त सब कुछ छोड़कर ये सैनिक भयंकर गर्मी में यहाँ देश की रक्षा के लिए रह रहे हैं। आस-पास न कोई गाँव, न शहर, न जंगल, न ही नदी नाले। ये सेना जगह-जगह पाकिस्तान की सीमा तक डेरा जमाए हुए हैं, ताकि हम सब सुरक्षित रहें।

रास्ते में कुछ जगह सड़क के किनारे नीम के पेड़ लगे हैं। हमारी बसें अब जैसलमेर के पास पहुँच गई थीं। जैसलमेर से 40 किलोमीटर आगे सम से पहले धोरों पर जगह-जगह पवन ऊर्जा के ऊँचे खम्बों पर बड़े-बड़े पंखे घूम रहे थे। यहाँ ऊर्जा का ये खास साधन है। सम गए तो नज़ारा अलग ही था। सम की रेतीली जमीन पर सैंकड़ों नहीं हजारों टैंट यात्रियों का स्वागत कर रहे थे। लोगों ने यहाँ जमीन लेकर कमाई के लिए अपनी-अपनी साइटें बनाई हुई हैं। हम भी एक साइट पर पहुँचे। यहाँ इसमें 40-50 छोटे-बड़े टैंट लगे थे, जिनमें चार से लेकर 15-16 तक यात्री रुक सकते हैं। इसी साइट में इनका दफ्तर, रसोई, डाइनिंग हाल, रंगमंचशाला भी है। यात्रियों के लिए हर तरह की सुविधा साइट के सामने ऊँचे-ऊँचे बालू टीले, टीलों की सैर करवाने के लिए सजे-धजे सैकड़ों ऊँट तैयार। यहाँ से कुछ किलोमीटर दूर धोरों पर खुली जीपें, थार जीपें यात्रियों को घुमाती हुई चक्कर कटवाती रहती हैं। सम में हर रोज हज़ारों पर्यटक आते हैं। फरवरी में एक विशेष ऊँट उत्सव के दौरान यहाँ यात्रियों की भारी भीड़ रहती है। विदेशी पर्यटक भी खूब आते हैं।

पहले से ही रिजर्व की गई साइट पर पहुँच कर सबसे पहले बैग एक जगह रखकर सभी ने जलपान किया। बाद में सभी को टैंट अलॉट कर दिए गए। नहा-धोकर कुछ विश्राम कर दोपहर एक बजे खाना खाया। चार बजे सभी बच्चों व शिक्षकों को धोरों पर घुमाया गया। मौसम ठण्डा-सा हो गया था। बालू रेत पर चलना अच्छा लगा। मैं फोटो खींच रहा था। इतने में एपीसी विनोद कुमार ने मुझे आवाज़ दी। मैंने जाकर देखा तो छोटी पूँछ वाली एक मरुस्थलीय छिपकली रेत पर अपने पंजों के निशान छोड़ती हुई कभी तेज़ तो कभी धीमी गति से रेंग रही थी। मैंने उसके कई फोटो खींचे। जब एक फोटो कैमरा नज़दीक करके लेने लगा तो एक सैंकिड में वह रेत में घुस गई। शिकारी को ये ऐसा ही धोखा देकर अपने को सुरक्षित कर लेती है। दिन में ये अपने बिलों में रहती है ताकि गर्मी न लगे। सुबह-शाम व रात को शिकार पर निकलती हैं। इन धोरों पर छोटे-बड़े भूंड भी हैं जिन्हें ये खाती होंगी। अन्य जानवर भी बहुत हैं जो रात को ही निकलते है। धोरों की अपनी अलग दुनिया है। जीवन कठिन अवश्य है।

कुछ देर बाद सूरज क्षितिज में विलीन होने की तैयारी में था। धोरों में बिल बनाकर रह रहे जीव-जन्तु भी अब बाहर आने की तैयारी में होंगे। हमने बच्चों की लाइनें बनवाईं तथा चल दिए अपने टैंटों की ओर। कुछ यात्री ऊँटों पर सवार हो अब भी घूम रहे थे। पता चला कि कुछ यात्री तो चाँदनी रात में भी ऊँटों पर सवार होकर

धोरों का आनन्द लेते हैं। रात को शायद ऊँट वाले अधिक पैसे लेते होंगे। रात को ऊँट की सवारी या जीप की सवारी का अपना अलग ही आनन्द व अहसास है जैसे चाँदनी रात में नौका विहार का। सूर्य डूबने से पहले हम टैंटों में आ गए। तुरन्त बाद हमने सांस्कृतिक कार्यक्रम आरम्भ किया। जहाँ लड़कियों ने नृत्य में प्रतिभा दिखाई, वहीं लड़के भी पीछे न रहे। इस कार्यक्रम की खास बात ये थी कि चारों तरफ लाइट की व्यवस्था, बैठने के लिए तीन ओर कुर्सियाँ तथा आगे दो लाइनें नीचे बैठे मेहमानों व दर्शकों की। नीचे बिछाए हुए गद्दे, पीठ लगाने के लिए मोटे-मोटे तकिये, राजा-महाराजाओं जैसे अहसास हो रहा था। एक घण्टा चले हमारे कार्यक्रम के उपरान्त साइट वालों की ओर से दो घंटों का कार्यक्रम शुरू हो गया। इस कार्यक्रम में दो नृत्यांगनाएँ, एक पुरुष कलाकार तथा कई राजस्थानी संगीतकार व गायक कलाकार थे। उन्होंने करीब दो घंटों का यादगार कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस तरह हर रोज ये कलाकार अपनी शानदार प्रस्तुतियाँ देते रहे।

सभी खाना खाकर सो गए। अगले दिन सुबह छह बजे सुखदेव ढिल्लों ने योग करवाया। फिर नहा धोकर ब्रेकफास्ट। दिनभर अनेक गतिविधियाँ चलीं तथा शाम चार बजे ऊँटों की सवारी का अवसर मिला। करीब 50 ऊँटों पर सवार होकर कतार में धोरों पर चलना गज़ब का मंजर प्रस्तुत कर रहा था। बच्चे खुश थे, उत्साहित थे, रोमांचित थे। शायद उन्होंने सोचा भी नहीं होगा कि कभी इस तरह से रोमांचक कार्यक्रम में भाग ले सकेंगे। करीब एक घंटे का धोरों का चक्कर लगाकर सभी बच्चे एक ऊँचे टीले पर उतार दिये गए। सभी यहाँ कुछ देर रहे फिर वापसी हुई। अगले दिन शाम को 15-16 जीपों में सवार होकर यहाँ से करीब 5 किलोमीटर दूर दूसरे धोरों पर चल दिए। आज अलग तरह का रोमांच व उत्साह था। जीपें कभी धोरों की चोटी पर धीमी गति से, तो कभी नीचे उतरते हुए तेज़ हो जातीं। थोड़ा डर भी लगा, किन्तु डर से अधिक रोमांच व आनन्द था। बच्चे आनन्द के साथ चिल्ला भी रहे थे। कुछ वीडियो भी बना रहे थे। फिर हम सभी कुछ देर के लिए एक जगह उतार दिए गए ताकि यहाँ की जगह का लुत्फ उठा सकें। फोटो ले सकें, घूम सकें तथा दूसरे दृश्यों का अवलोकन कर सकें। यहाँ पर यात्रियों की भारी भीड़ थी। सैकड़ों जीपें दिखाई दे रही थी। सभी यात्री अपने में मस्त थे, व्यस्त थे। ऊँटों की सवारी यहाँ भी थी। घूमने के लिए छोटी-छोटी जीपें भी थीं, जिन पर एक ही आदमी सवार हो सके। कुछ देर रहने के उपरान्त हम सूर्यास्त के साथ वापस आ गए।

अगले दिन हम भारत-पाक सीमा देखने सुबह नौ बजे निकल लिए। सम से निकलने के बाद सड़क के दोनों तरफ केवल रेत, असंख्य झाड़ियाँ, कहीं-कहीं पत्थरों के बने छोटे-छोटे मकान, भेड़-बकरियों के घूमते हुए झुंड कहीं-कहीं लावारिस घूमती गायें। कहीं-कहीं सैनिकों की छोटी-छोटी छावनियाँ, छोटे-बड़े पक्षी, कहीं-कहीं दूर तक महसूस होती या दिखती वीरानगी, कहीं-कहीं काम करते महिला-पुरुष, इधर-उधर घूमते, बैठते या खेलते बच्चे, नीले आकाश में पूर्व में चमकता तथा धीरे-धीरे हर-पल गर्म होता सूर्य, मरुस्थल से गुज़रती हुई सर्पिणी-सी पतली-संकरी सड़क उस पर चलते कोई-कोई वाहन, हमारी बस भी अपनी गति से पतली सड़क से रेंगती हुई आगे बढ़ रही थी।

हम कुछ घंटे बाद माता तनोट राय मन्दिर आ गए। माता तनोट की यहाँ काफी मान्यता है। सैनिकों के लिए ये देवी विशेष रूप से आराध्य है। कहा जाता है कि 1965 में भारत-पाक युद्ध के समय पाकिस्तान ने मन्दिर तथा उसके आसपास बहुत बम बरसाये। इनमें से करीब अनेक गोले मन्दिर परिसर में गिरे, किन्तु मंदिर को खरोंच भी नहीं आई, क्योंकि वे गोले फटे ही नहीं। बस से उतरकर सभी मंदिर में गए। फोटो लिए तथा बॉर्डर पर जाने के लिए हमने मंदिर से पास बनवाया। सभी के लिए बस छोड़कर अलग से जीपें या गाड़ियाँ किराए पर कीं, क्योंकि बस को आगे जाने की अनुमति नहीं थी। तीन जगह गाड़ियों की चैकिंग होने के बाद हम बॉर्डर की ओर रवाना हुए। हमने यहाँ अनेक जंगली गधे देखे। पूछने पर पता चला कि पहले ये गधे पालतू थे। इनके मालिक यहाँ से अन्य कहीं जाकर बस गए तो गधों को यही छोड़ गए। धीरे-धीरे इनकी संख्या भी बढ़ गई तथा ये जंगली गधे हो गए। हालांकि ये किसी का किसी तरह का नुक्सान नहीं करते। यहाँ लावारिस गायें भी घूमती नज़र आईं। करीब एक घण्टे के सफर के बाद हम बॉर्डर पर पहुँच गए। बार्डर पर पर्यटकों की भीड़ थी। सभी बच्चे व शिक्षक बॉर्डर के बिल्कुल नज़दीक गए। उसके बाद हमें एक ऊँचे टॉवर पर चढ़ा दिया गया। वहाँ से पाकिस्तान की सीमा पार के खेत, चरती हुई गायें दिखाई दे रही थीं। कुछ सीमा चौकियाँ नज़र आ रही थीं। करीब एक घण्टे के उपरान्त सभी वापिस लौटे। वापस आते समय चिनोट पार करके रास्ते में लौंगोवाल वार मैमोरियल देखा। यहाँ पाक-भारत युद्ध से जुड़ी निशानियाँ लगी हुई हैं। युद्ध में प्रयोग में लाए गई तोपें, बन्दूकें, मशीनगन, वाहन, यहाँ प्रदर्शित हैं। पाकिस्तान की कुछ तोपें भी यहाँ प्रदर्शित हैं। साहस, प्रेरणा, शौर्य, युद्ध और जीत के प्रतीक संग्रहालय को देखने के उपरान्त हम वापिस सम की ओर चल दिए।

सूर्यास्त होने वाला था। धीरे-धीरे उजाला कम होने लगा तथा अँधेरे ने अपना साम्राज्य फैलाना आरम्भ किया। रास्ते में सड़क के दोनों ओर मरुभूमि पर गडरियों की छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ व भेड-बकरियों के बाड़े थे। हमने देखा कि चारों ओर से भेड-बकरियाँ चरती हुई अपने बाड़ों की तरफ आ रही थीं। इनके साथ इनका कोई मालिक नहीं था। इसी तरह दिनभर चर कर, झाड़ियाँ, जड़ी-बूटियाँ, पेड़ों, झाड़ियों के पत्ते खाकर अँधेरा होने से पहले अपने आप ही अपने-अपने बाड़ों में आ जाती हैं। बच्चों के लिए ये भी नेचर-स्टडीज का एक हिस्सा था। कुछ बच्चे इन सभी घटनाओं, दृश्यों व जीवन, भौगोलिक स्थितियों को अपनी कॉपियों में नोट कर रहे थे। रात करीब आठ

बजे हम अपने ठहराव स्थल पर आ गए।

अगले दिन सुबह छह बजे उठकर सभी को निकट के धोरों पर ले जाकर योग करवाया गया। मनोरंजन के लिए कुछ खेल करवाए गए। आज का दिन इनकी कुछ सृजनात्मक गतिविधियों का दिन था। सुबह 9 बजे धोरों की चोटी पर लेकर मैंने इनको पेंटिंग सिखाई। मरुस्थलीय दृश्यों को बनाना, रंग भरना सिखाया। बच्चों ने इसमें खास इच्छा दिखाई। ग्यारह बजे बच्चों की पेंटिंग व मेहँदी लगाओ प्रतियोगिता आयोजित की गई। उस दिन शरद् पूर्णिमा थी। कुछ गतिविधियों के लिए सभी को धोरों पर ले जाया गया। यहाँ अनेक तरह के आकर्षक नज़ारों के अलावा उस दिन शरद पूर्णिमा का चाँद विशेष आकर्षण फैला रहा था। चन्द्रमा की रजत किरणें बालू को अपना रंग दे रही थीं। सभी ऊँट पर सवार हुए पर्यटक सब जा चुके थे। चारों तरफ शान्त माहौल था। रेत में बिलों में छिपे बैठे छोटे-बड़े भूण्ड, छिपकलियाँ या अन्य कीट-जीव बाहर आकर विचरण करते दिखाई दिए। ज्यादा नहीं तो मुझे चार-पाँच जीव रेत पर घूमते दिखे। हवा बन्द थी। मौसम कुछ-कुछ ठंडा हो चुका था। रेत की देह पर लगे टैंटों से हज़ारों बल्बों की रोशनियाँ झिलमिल होती हुई दीवाली जैसा नज़ारा प्रस्तुत कर रही थीं। मैंने कुछ फोटो किए तथा कैंप की ओर चल दिया। रात को आठ बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा सम्मान समारोह था। बच्चों ने शानदार प्रस्तुतियाँ दीं। बच्चों व शिक्षकों को प्रमाण-पत्र बाँटे तथा पेंटिंग व मेहँदी प्रतियोगिता विजेताओं को पुरस्कार दिये गए।

अगले दिन सुबह सभी ने अपने-अपने बैग तैयार किए, खाना खाया तथा जैसलमेर की ओर चल दिए। राजस्थान के थार मरुस्थल में स्थित जैसलमेर की स्थापना भारतीय इतिहास के मध्यकाल के प्रारम्भ में 1178 ई0 में राजपूत भाटी के वंशज राव जैसल ने की थी। उनके वंशजों ने यहाँ 770 वर्ष के भारत आज़ाद होने तक राज किया। अंग्रेज़ों के शासनकाल में इस राज्य ने अपने वंश गौरव व महत्त्व को बचाये रखा। भारत की स्वतंत्रता के उपरान्त यह राज्य भारतीय गणतंत्र में विलीन हो गया। उस समय इसका भौगोलिक क्षेत्र 16,062 वर्गमील के विस्तृत भू-भाग में फैला हुआ था।

क्षेत्र में बड़ी मात्रा में जीवाश्मों की होने वाली प्राप्ति भी पहले यहाँ समुद्र होने के प्रमाण देते हैं। इसके पश्चिम में मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, उत्तर पूर्व में कालीबंगा, पूर्वी क्षेत्र में सरस्वती के उत्खनन से स्पष्ट है कि कभी यहाँ भी बस्तियाँ रही होंगी। अपनी समृद्ध परम्पराओं, आकर्षक वैभव, सुन्दर भवन निर्माण-कला, संस्कृति, रंगीन वेशभूषा, अनूठे तीज-त्यौहारों, मेलों, उत्सवों व मरु टीलों के कारण यह क्षेत्र पर्यटकों, लेखकों, छायाकारों, कलाकारों, विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का कारण रहा है। यहाँ हर वर्ष लाखों पर्यटक मेला, धोरों, कलात्मक भवनों, पत्थरों की नक्काशी, हस्तकला देखने आते हैं।

जैसलमेर शहर के बाद बड़े बाग में शाही परिवारों के मकबरों की शृंखला है। ये कलात्मक छतरियाँ पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। यहाँ बगीचे में टहलते हुए बहुत सारे पक्षियों की चहचाहट अच्छी लगती है। यहाँ घूमने का अच्छा मौसम नवम्बर से फरवरी है। ये कलात्मक छतरियाँ देखने की एक आदमी की सौ रुपये टिकट है। छतरियाँ देखकर हम जैसलमेर शहर में होते हुए किले की ओर बढ़े। किले के मुख्य दरवाजे से करीब 300 मीटर पहले हमारी बस रोक दी तथा हम पैदल हो लिए। किले के साथ-साथ ऊँचाई पर बना किला देश के अन्य किलों से कई अर्थों में भिन्न है। हम किले के साथ-साथ 10-12 मिनट में मुख्य द्वार पर पहुँच गए। दरवाज़े के अन्दर घुसकर चारों ओर देखा तो सामने किले की भव्य इमारत थी। इस किले में महल, बगीचे, कई मंदिर, बाज़ार, संग्रहालय, बहुत सी कलात्मक हवेलियाँ तथा सैकड़ों परिवार निवास करते हैं। जैसलमेर का भव्य किला यूनेस्को की विश्व धरोहर में शामिल है। पूरा किला बलुआ पत्थरों को तराशकर, काटकर बनाया हुआ है। किले से सूर्यास्त का अद्भुत नज़ारा दिखाई देता है। सूर्यास्त के समय समस्त किला सूर्य की स्वर्णिम किरणों में नहाया लगता है। इसलिए इस किले का नाम सोनार या स्वर्णिम किला भी कहा जाता है। किले का निर्माण 1156 में भाटी राजपूत राजा रावल जैसल ने करवाया था। यह किला दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान का किला माना जाता है। हमने पहले बाज़ार देखा। हवेलियाँ, कलात्मक मन्दिरों का अवलोकन किया। किले के उस हिस्से में गए जहाँ पर एक तोप रखी है तथा यहाँ से पूरा जैसलमेर शहर दिखाई देता है।

उसके बाद हम जैन मंदिर गए। यहाँ कैमरे की 50 रुपये टिकट थी। मोबाइल बाहर रखवा लिया जाता है। किन्तु जैन मंदिर में प्रवेश करते ही आनन्द आ जाता है। इसमें बहुत सी कलात्मक मूर्तियाँ दीवारों, खम्भों पर लगी हैं। एक दाढ़ी वाले भगवान राम की मूर्ति भी है। मन्दिर की दीवारें मूर्तियों से सजी हैं। हमने जैसलमेर की कुछ खास हवेलियाँ भी देखीं। उसके बाद मरु शहर को अलविदा कहकर हम बस में सवार होकर हरियाणा की ओर चल दिए। यह यात्रा निःसन्देह अन्य यात्राओं से अलग अनोखी व यादगार रही। इस यात्रा के दौरान बच्चों ने जो नेचर स्टडी की वह इनके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

मनाली यात्रा में जीवन का पाठ पढ़ाती प्रकृति

सुमन कादयान

इस मशीनीयुग में मानव ने भरपूर विकास किया है। हर तरह की सुख-सुविधाएँ जुटा ली हैं। मोबाइल, टीवी, इंटरनेट, कंप्यूटर, लैपटॉप तथा एक से बढ़कर एक एडवांस मशीनों का प्रयोग हम कर रहे हैं। पृथ्वी से चाँद तक की दूरी सिमट कर रह गई है। किंतु इन सब के बीच हमने उस प्रकृति को भुला दिया जो हमें सब कुछ दे रही है। विकास की भागमभाग में हम प्रकृति के संरक्षण की बजाय दोहन करने में लगे हैं। इसलिए अति आवश्यक है कि प्रकृति का संरक्षण हो, नदी-नालों, झरनों, जंगलों, पहाड़ों, खेतों, मरुस्थल, समुद्र, हवा, पानी को बचाया जाए। अगर हमने इन सबको बचाना है तो सबसे बेहतर, कारगर, सार्थक तरीका है नई पीढ़ी को इसकी सीख दी जाए। विद्यार्थी वर्ग इसके लिए अच्छा विकल्प है। विद्यार्थियों में प्रकृति-संरक्षण की भावना जागृत हो जाए तो आगे चलकर पेड़ पौधों, नदियों, पहाड़ों, जंगलों का काफी हद तक बचाव हो सकता है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग ने इस पहलू पर विचार करते हुए नेचर स्टडीज कैंप आरंभ किए हैं। हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद के एसोसिएट कंसलटेंट रामकुमार ने बताया कि नेचर स्टडीज कार्यक्रम के तहत प्रकृति का बारीकी से अध्ययन करने व प्रकृति संरक्षण के प्रति रुचि जगाने के उद्देश्य से विभाग सरकारी विद्यालयों में पढ़ रहे प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए देश के कई हिस्सों में एडवेंचर कैंप आयोजित कर रहा है। इसके तहत बच्चों को दार्जिलिंग, पंचमढ़ी, उड़ीसा, जैसलमेर, केरल, गढ़पुरी, मनाली घुमाया जा रहा है ताकि विद्यार्थी मरुस्थली, समुद्री, पहाड़ी, जंगली क्षेत्र का अध्ययन कर सकें। मनाली नेचर स्टडीज एडवेंचर कैंप इसी उद्देश्य का एक हिस्सा है। पिछली 19 अक्टूबर से 8 नवंबर, 2023 तक मनाली में नेचर स्टडीज एडवेंचर कैंपों का आयोजन किया गया, जिनमें हरियाणा के 22 जिलों से 1232 छात्र-छात्राओं तथा शिक्षकों ने भाग लिया।

2 नवंबर से 4 नवंबर, 2023 तक फतेहाबाद सहित नूँह, पलवल, पंचकूला, सिरसा व यमुनानगर

जिलों को शामिल किया गया। आदेशानुसार सभी 2 नवंबर को पंचकूला के लिए रवाना हुए। फतेहाबाद की टीम की बस को डीपीसी प्रदीप नरवाल ने हरी झंडी दिखाई। करीब 5 घंटे के सफर के बाद विद्यार्थी शाम को चार बजे पंचकूला के सेक्टर-15 स्थित सरकारी स्कूल में पहुँच गए। आवश्यक कार्य निपटाने, खाना खाने के बाद रात दस बजे सभी बसों में सवार होकर मनाली की ओर चले। रात का सफर भी अनुभव का एक हिस्सा है। फिर दिन भी खराब नहीं होता। बच्चों ने गाड़ी चलने पर अपने-अपने आराध्यों की जय बोली, मस्ती में कुछ देर अन्त्याक्षरी खेली, वे कुछ देर खिड़कियों से बाहर झाँक आपस में बतियाते रहे, फिर धीरे-धीरे सोते गए। सुबह उठे तो चारों ओर विशाल ऊँचे पहाड़, जंगल, खेत, पहाड़ों पर बने मकान, सड़क के साथ-साथ बहती व्यास नदी देख कर अचंभित रह गये। व्यास नदी का पुलपार करके कैंप साइट पहुँच गए। यहाँ फतेहाबाद, पलवल तथा कुरुक्षेत्र जिले एक साथ ठहराने की व्यवस्था की गई थी। अन्य तीन जिले हरिपुर साइट पर सेबों के बागों के पास व नदी के किनारे स्थित साइट पर ठहरे थे। नाश्ता तैयार था। नहाए-धोए, नाश्ता किया, बच्चे कौतूहल से आसमान छूते पहाड़ों, चोटियों पर पड़ी जमी बर्फ, सेबों के बाग, साथ में गरजती हुई तेज गति से बहती व्यास नदी, पहाड़ी जंगल, झोपड़ीनुमा मकान, बड़े-बड़े होटल, बादलों की आँख मिचौली देख रहे थे। ठंड बहुत थी, पर धूप निकलने पर मौसम सुहावना हो गया, सभी धूप सेंकने लगे।

बच्चों की गतिविधियाँ शुरू होने से पहले नेशनल एडवेंचर क्लब इंडिया के संयुक्त सचिव राकेश पवार ने सभी शिक्षकों की एक मीटिंग लेकर कैंप के बारे में आवश्यक जानकारियाँ व हिदायतें दीं। इस समय पहले से ही कैंपों को संभाल रहे सत्येंद्र व जयबीर सिंह डीपीई ने महत्वपूर्ण बातें साँझा कीं। बच्चों को साहसिक गतिविधियों के लिए बाहर ले जाया गया। नई-जगह, नई गतिविधियाँ, मौसम में परिवर्तन, नई ऊर्जा, नया जोश तथा उत्साह था। बच्चों ने बड़े चाव से गतिविधियों में भाग लिया। दिन भर व्यस्त रहने के बाद शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम की धूम रही। एपीसी नरेश कुमार, रायसिंह, हरदीप सिंह ढिल्लों, मायादेवी, कमलेश बागड़ी का सहयोग रहा।

अगले दिन सुबह नाश्ता करके ट्रैक की तैयारी की। सेबों के बागों के बीच से होते हुए, श्याम सुख गाँव की गलियों से गुज़रते हुए, गायत्री माता मंदिर देखने गए। इस प्राचीन मंदिर की बहुत मान्यता है। स्थानीय लोगों के साथ-साथ दूर-दूर से श्रद्धालु यहाँ आते हैं। खाना खाकर दोपहर बाद व्यास नदी के दूसरे पार पहाड़ी से गिरते छोटे से पारसा झरने को देखने गए। नदी पुल से पार करके ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ते तथा जंगल के रास्ते से गुज़रते हुए सभी पारसा झरने के निकट पहुँच गए। यहाँ से मनाली व पूर्व दिशा में देखने पर गज़ब के नज़ारे दिखाई देते हैं। पेड़ों के झुरमुटों के बीच से पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियाँ, हसीन वादियाँ, बहती नदी का दृश्य, पहाड़ों की ढलानों में बसे कई छोटे-छोटे गाँव, सेबों के बाग, चहचहाते उड़ते पक्षियों की टोलियाँ, कहीं धूप तो कहीं छाँव, अठखेलियाँ करते मेघों के समूह, ठंडी हवा, देवदार के आसमान छूते पेड़, कैमरे में ये सभी दृश्य कैद करके सभी को अच्छा अनुभव हो रहा था। सामान्यतः गरीब घरों के विद्यार्थियों को यह सब कहाँ देखने को मिलता है। बच्चे शिक्षा विभाग का धन्यवाद कर रहे थे। आगे बढ़े तो काफी ऊँचाई से गिरते हुए झरने को देखकर बच्चे उछल पड़े। बच्चों की खुशी का ठिकाना न था। बच्चों ने यहाँ खूब मस्ती की, फोटो लिए तथा वापसी की तैयारी की।

अगले दिन सभी मनाली शहर में भ्रमण के लिए गए। खाना खिलाकर बसों में सवार हो सभी मनाली चल पड़े। यहाँ बच्चों को अपने-अपने शिक्षकों के साथ ग्रुप बना कर घूमने को कह दिया गया था। बच्चों ने यहाँ के अनेक धार्मिक, ऐतिहासिक स्थलों का अवलोकन कर कई घंटे बाज़ार में बिताए। कुछ बच्चों ने निशानी के तौर पर कुछ खरीददारी की।

बच्चों की पेंटिंग व मेहँदी प्रतियोगिता की गई। इससे पहले शिक्षक ओमप्रकाश कादयान ने उन्हें चित्रकारी के कुछ गुर सिखाए। अगले दिन बच्चों को कुछ साहसिक गतिविधियाँ कराई गईं। दोपहर बाद बड़े स्तर पर सांस्कृतिक व सम्मान समारोह आयोजित किया गया। पंचकूला, पलवल, फतेहाबाद के सभी बच्चों को प्रमाण-पत्र बाँटे गये । प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को इनाम बाँटे गए। हरिपुर वाले कैंप का आयोजन भी इसी तरह का था। शाम को मधुर यादों के साथ वापसी की यात्रा आरंभ हुई।

180, मार्वल सिटी
हिसार, हरियाणा

मधुर स्मृतियों का अंग बन गया जयपुर भ्रमण

दर्पण

शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा 11वीं कक्षा में पढ़ रहे इतिहास के विद्यार्थियों के लिए ऐतिहासिक धरोहर को करीब से जानने के लिए एक विशेष शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा इस कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। जिला शिक्षा अधिकारी कुरुक्षेत्र श्री रोहताश वर्मा जी ने इस भ्रमण की सभी तैयारियाँ करवाईं। मुझे तथा श्री रमेश कुमार प्रिंसिपल राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बबेन, कुरुक्षेत्र को राज्य संयोजक सदस्य के रूप में जाने का अवसर मिला।

इस भ्रमण में विभिन्न जिलों से 55 छात्रों तथा 55 छात्राओं के साथ-साथ पाँच अध्यापक और पाँच अध्यापिकाओं ने भाग लिया। 6 दिवसीय यह भ्रमण 14 अक्टूबर, 2023 से शुरू होकर 19 अक्टूबर, 2023 तक चला। सभी विद्यार्थियों को कुरुक्षेत्र बुलाया गया। सभी विद्यार्थियों को दो बसों में जिला शिक्षा अधिकारी कुरुक्षेत्र द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

भ्रमण का आकर्षण आमेर का किला, जयगढ़ किला, जल महल, बिरला तारा मंडल आदि रहे। इतिहास के विद्यार्थियों को ऐतिहासिक धरोहर से अवगत कराने के लिए दो स्थानीय गाइड की व्यवस्था की गई। गाइड ने किले के निर्माण से लेकर किले पर राज करने वाले राजाओं की कहानी विद्यार्थियों को पूरे विस्तार से सुनाई। इतिहास से रूबरू होने का सुनहरा अवसर पाकर विद्यार्थियों के चेहरों पर खुशी का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

विद्यार्थियों को सबसे पहले आमेर का किला दिखाया गया। आमेर का किला राजपूतानी कला का अद्वितीय उदाहरण है। इस किले का निर्माण राजा मानसिंह ने किया था इस किले के मुख्य द्वार को गणेश पोल कहा जाता है। आमेर के किले में एक छोटी सी खिड़की है, जिसे शाही परिवार की महिलाओं को ध्यान में रखकर बनाया गया था। इस खिड़की से वह मुख्य-हाल में होने वाली चीज़ों को देखा करती थी। कलाकारों द्वारा की गई नक्काशी विद्यार्थियों को मंत्रमुग्ध कर रही थी। राजपूताना शैली में बना यह किला विद्यार्थियों के मन को भा गया था। इस किले की खूबसूरती बच्चों को बहुत पसंद आई। उनके लिए यह एक अलग ही अनुभव था।

जयपुर का दूसरा आकर्षण हवा महल रहा, इसे महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने बनवाया था। हवा महल एक पाँच मंजिला इमारत है। गाइड द्वारा हवा-महल के बारे में कुछ आकर्षक बातें बताई गईं। उन्होंने बताया यह महल ठोस नींव की कमी की वजह से घुमावदार और 8 5 डिग्री के कोण पर झुका हुआ है। हवा महल जयपुर में विशेष आकर्षण का केंद्र है। इस महल में अनेक छोटे-छोटे झरोखे हैं। एक छात्रा ने गाइड से पूछा ये झरोखे क्यों बनाए गए थे? उनका कहना था ये झरोखे राजपूत महिलाओं के लिए बनाए गए थे, ताकि वे नीचे गली में हो

रही गतिविधियों को देख सकें।

इसके बाद विद्यार्थियों को जयगढ़ का किला दिखाया गया। इतिहास के प्रवक्ताओं ने बच्चों को इस किले के बारे में जानकारी दी। इस किले का निर्माण महाराजा सवाई जय सिंह के द्वारा किया गया था। इसे सबसे मज़बूत किला कहा जाता है। इस किले में बच्चों को दो तोपें दिखाई गईं। तोपों के साथ बच्चों ने फोटो खिंचवाईं। सभी विद्यार्थी बहुत खुश थे। जयपुर शहर को देखने का विद्यार्थियों का उत्साह और बढ़ता जा रहा था।

बच्चों के लिए अगला आकर्षण का केंद्र जल महल रहा। जल महल की सुंदरता अद्भुत है, जो देखते ही बनती है। यह मान सागर झील के बीच में स्थित है। शुरू में देखते ही ऐसा लगेगा कि जैसे यह झील पर तैर रहा है। बच्चों ने आश्चर्यचकित होकर अध्यापकों से इसके बारे में जानने की कोशिश की। जल महल राजपूत वास्तु कला का एक शानदार उदाहरण है। बहुत सारे पक्षी इसके आकर्षण को बढ़ाते हैं। जल महल के बाहर बच्चों ने राजस्थानी सभ्यता की पोशाक पहनकर फोटो खिंचवाईं। विद्यार्थियों को पत्रिका गेट भी ले जाया गया। इस गेट का निर्माण राजस्थान पत्रिका प्रकाशन समूह द्वारा किया गया है।

विद्यार्थियों को तारामंडल और तारों की दुनिया बहुत पसंद होती है। इस दुनिया में रहने का मौका उन्हें बिरला तारामंडल में मिला। यह तारामंडल बच्चों के साथ-साथ वयस्कों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है। इसमें खगोल विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान से संबंधित शो दिखाए जाते हैं। लगभग एक घंटे का शो चला जिसमें अंतरिक्ष विज्ञान के बारे में दिखाया गया। यह बहुत ही मनमोहक लगा। विद्यार्थियों को गलताजी मंदिर भी दिखाया गया। यह जयपुर से 10 किलोमीटर दूर है। यह बहुत पवित्र और प्रसिद्ध स्थल है। इसमें एक पवित्र कुंड भी बना हुआ है।

इतिहास के बारे में बहुत कुछ सीखा जयपुर-भ्रमण से

मेरा नाम गुरप्रीत है। मैं राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खैरी, कुरुक्षेत्र का विद्यार्थी हूँ। मुझे जयपुर भ्रमण पर जाकर बहुत अच्छा लगा। जयपुर शहर के बारे में जानने का मौका मिला। इस भ्रमण के माध्यम से सभी के साथ मिलकर रहना सीखा। मुझे सभी जगहें बहुत पसंद आईं। बिरला तारामंडल और गुलाबगढ़ सबसे अच्छे स्थल लगे। बिरला तारामंडल में अंतरिक्ष के बारे में जानकारी मिली। बहुत ही खूबसूरत दृश्य था। मुझे बहुत पसंद आया। आमेर का किला और हवा महल भी कमाल के स्थल हैं। ये यादें मन में हमेशा बसी रहेंगी। इस भ्रमण के माध्यम से हमें इतिहास को करीब से जानने का मौका मिला।

बच्चों को भानगढ़ किले में भी ले जाया गया। यह किला बहुत ही प्रसिद्ध है और इसे भुतहा किला भी कहा जाता है।

विद्यार्थियों को गुलाबगढ़ भी ले जाया गया, जो बिल्कुल चौखी ढाणी की तरह है। गुलाबगढ़ में प्रवेश करते ही बच्चों ने राजस्थानी लोक संगीत सुना और उसकी धुन पर नृत्य भी किया। सभी बच्चे बहुत उत्साहित लग रहे थे। बच्चों ने यहाँ पर बहुत सारे करतब देखे। छात्राओं ने यहाँ मेहँदी भी लगवाई। कई तरह के खेल खेले। बच्चों ने झूलों का आनंद उठाया। ऊँट की सवारी, गाड़ी की सवारी और घोड़े की सवारी भी की। गुलाबगढ़ की सबसे खास बात थी कि वहाँ पर राजस्थानी सभ्यता संस्कृति के अनुसार रात्रि भोजन करवाया गया, जिसे बच्चों ने बहुत पसंद किया। विद्यार्थियों को चिड़ियाघर भी ले जाया गया। वहाँ उन्होंने अनेक पशु-पक्षियों की काफी प्रजातियाँ देखीं। 19 तारीख को यादों को मन में समेटे हुए सभी ने जयपुर से कुरुक्षेत्र की ओर प्रस्थान किया। विद्यार्थियों के लिए यह एक अविस्मरणीय अनुभव रहा, जिसे वे हमेशा याद रखेंगे।

गणित प्रवक्ता
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, एमपी रोही
जिला- फतेहाबाद, हरियाणा

चिरकाल तक दिलों में बसी रहेगी भोपाल की यात्रा

अक्टूबर में राजकीय विद्यालयों के 110 विद्यार्थियों ने की भोपाल के ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा

विद्यार्थी जब भी किसी लम्बी यात्रा पर जाते हैं वे उस यात्रा के दौरान बहुत कुछ सीखते हैं। जगह और यात्रा के हिसाब से नदी, नाले, झरने, पहाड़ों, ग्लेशियरों, वादियों, घाटियों, दर्रों, जंगलों, खेतों, गुफाओं, मन्दिरों, मरुस्थलीय टीलों, समुद्री तटों, झीलों, तरह-तरह की वनस्पतियों, पशु-पक्षियों, जन-जीवन, ऐतिहासिक इमारतों को वे देखते हैं, तो निःसन्देह विद्यार्थी बहुत कुछ सीखते हैं। यही ज्ञान और अनुभव उन्हें बहुत कुछ ऐसा सिखाता है जो उम्रभर काम आता है। यह ज्ञान उन्हें आत्मविश्वासी बनाता है। किन्तु अगर कोर्स की किताबों से सम्बन्धित चीजें ही उन्हें विद्यालय की चार-दीवारी से दूर ले जाकर प्रत्यक्ष रूप से दिखाई जायें तो ये यात्राएँ और भी अधिक सार्थक व उपयोगी सिद्ध होती हैं।

इस बार हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला ने कुछ ऐसा ही सोचा कि बच्चों की यात्रा भी हो जाए तथा कोर्स से सम्बन्धित ठोस जानकारी उन्हें बाहर जाकर मिल जाए। कक्षा नौवीं से बारहवीं तक फाइन आर्ट्स के कोर्स में देश के प्रमुख कलात्मक मन्दिरों, शैल चित्रों से सजी गुफाओं, कला से जुड़े संग्रहालयों, राज्यों की कला-शैलियों को उनके कोर्स में शामिल किया गया है, जिन्हें शिक्षक किताबों के माध्यम से उन्हें पढ़ाते हैं। अवलोकन के लिए उनकी पुस्तकों में कुछ कलात्मक मन्दिरों, गुफाओं, शैलियों के चित्र भी दिए हैं, किन्तु किताबों में देखने-पढ़ने तथा प्रत्यक्ष रुप से देखने में बहुत बड़ा अन्तर होता है। प्रत्यक्ष रूप से देखने से बच्चा उन स्थलों, मन्दिरों, गुफाओं, कलात्मक दृश्यों, पर्यटन स्थलों को सारी उम्र नहीं भूलता। शिक्षा विभाग ने लीक से हटकर सोचते हुए इस बार सरकारी विद्यालयों में पढ़ रहे फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों का एक यादगार टूर बनाया। हरियाणा भर से फाइन आर्ट्स के प्रतिभावान 110 छात्र-छात्राओं को भोपाल व उसके आसपास के उन स्थलों का भ्रमण करवाया, जो उनके पाठ्यक्रम में शामिल हैं। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला की प्रोग्राम आफिसर ने बताया कि इस तरह का टूर पहली बार भेजा गया जो पूर्ण रूप से पाठ्यक्रम से सम्बन्धित था। पाठ्यक्रम में शामिल स्थलों, कला-मूर्तियों, शैल चित्रों, गुफाओं, कलात्मक मन्दिरों को अपनी आँखों से प्रत्यक्ष रूप से देखने का अर्थ है बेहतरीन तरीके से और प्रैक्टिकल रूप से कोर्स करवाना। यह एक नया उपयोगी, सार्थक कार्यक्रम है, जिसका फायदा विद्यार्थियों को सीधे तौर पर मिलेगा।

योजनानुसार 8 अक्टूबर को सभी जिलों से 110 (55 लड़के+55 लड़कियाँ) विद्यार्थी तथा 10 (5 पुरुष +5 महिला) शिक्षक कुरुक्षेत्र के रेणुका सदन में एकत्र हुए। खाना खाने के उपरान्त आवश्यक निर्देश देकर कुरुक्षेत्र के जिला शिक्षा अधिकारी रोहताश वर्मा ने हरी झंड़ी दिखाकर दिल्ली के लिए भ्रमण दल को रवाना किया। इस मौके पर शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव सुधीर राजपाल, तत्कालीन निदेशक डॉ.अंशज सिंह, अतिरिक्त निदेशक अमृता सिंह, सहायक निदेशक कुलदीप मेहता ने भ्रमण पर जाने वाले विद्यार्थियों व शिक्षकों को शुभकामनाएँ दीं।

छह बसों में सवार 22 जिलों के 55 छात्र, 55 छात्राएँ, 5 शिक्षक डॉ. सतीश शाहू (चरखी दादरी), डॉ. ओमप्रकाश कादयान (फतेहाबाद), संदीप कुमार (हिसार), प्रवीन कुमार (कुरुक्षेत्र), विशाल सिंघल (यमुनानगर) तथा 5 शिक्षिकाएँ प्राचार्या मनदीप शर्मा (करनाल), दीपा रानी (पंचकूला), पूनम (कुरुक्षेत्र), डॉ.

सुनीता ढुल (सोनीपत), डॉ. महिमा (गुरुग्राम) ने उत्साह, जोश व खुशी के साथ अपनी यात्रा आरम्भ की। बच्चों के चेहरों पर मुस्कान, बहुत कुछ नया देखने, सीखने की चाहत व उत्सुकता थी। हम सभी समय से पहले निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए। गाड़ी 'शान-ए-भोपाल' निर्धारित समय पर प्लेटफार्म 8 से भोपाल के लिए रवाना हुई तथा साढ़े सात बजे भोपाल जंक्शन पर पहुँची। वहाँ पर पहले से बुक की गई दो बसें तैयार थी। हम सभी बसों में बैठकर भोपाल शहर में होते हुए शाहपुर झील के किनारे स्थित एक आश्रम में आ गए। यहाँ हमारे रहने, खाने-पीने की बढ़िया व्यवस्था थी। आश्रम में सुन्दर कमरे, इमारत के बीच में सुन्दर फूलों व घास का मैदान, कार्यक्रम आयोजन के लिए बड़ा हाल, इमारत के आगे खिले तरह तरह के फूल, सुन्दर पेड़, पीछे एक छोटी-सी झील, उसमें मुस्कराते हुए आकर्षक गुलाबी रंग के कमल पुष्प, घूमने के लिए चौड़ी सड़कें, चारों और जंगल जैसी हरियाली, चहचहाते, किलोल करते रंग-बिरंगे छोटे-बड़े पक्षी तथा सुहाना मौसम। यहाँ आकर सबको अच्छा अनुभव हो रहा था।

सभी को कमरे अलॉट कर दिए गए। सभी नहाए-धोए, फिर भोजन किया। कुछ आराम करने के उपरांत सभी बच्चों को एकत्र कर कॉर्डिनेटर डॉ. सतीश शाहू, प्राचार्या मनदीप शर्मा व मैंने बच्चों को कुछ खास हिदायतें व आवश्यक जानकारी दी तथा योजनानुसार बसों में सवार होकर उदयगिरि की गुफाएँ व साँची के स्तूप देखने चल पड़े। शहर से बाहर निकलकर कुछ किलोमीटर दूर चल कर मुख्य सड़क पर हमने कर्क रेखा से गुज़रना था। चालकों ने बसों को रोक दिया तथा बस से उतरकर सभी ने वह कर्क रेखा देखी जिसके बारे में हम सभी किताबों में पढ़ा करते थे। विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम का एक अहम हिस्सा, महत्त्वपूर्ण जानकारी आँखों से देखकर ग्रहण कर रहे थे। यहाँ हम करीब 15-20 मिनट रुके, फोटो किए, बच्चों को कर्क रेखा के बारे जानकारी दी तथा आगे की यात्रा आरम्भ की। उसके बाद सीधे हम भोपाल से उदयगिरि की गुफाएँ देखने गए। प्राकृतिक माहौल में खेतों के बीच पहाड़ियों पर बनी ये गुफाएँ स्थापत्य कला का बेहतरीन नमूना हैं। जानकारी के अनुसार इन्हें चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने के उपरांत बनवाया था। गुफाओं के निर्माण और उनमें देवी-देवताओं की प्रतिमाओं की स्थापना के पीछे वैष्णव और उनमें जैन धर्मों का प्रचार झलकता है। यहाँ कुल बीस गुफाएँ हैं, जिनमें दो जैन धर्म तथा शेष अठारह हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हैं। पहाड़ी पर मौर्य, शुंग और नागकालीन अवशेष देखे गए हैं, जिनमें बौद्ध स्तूप भी हैं। गुफाएँ देखने की प्रति व्यक्ति 50 रुपये की टिकट है। प्रवीन कुमार व सतीश शाहू यहाँ स्थित कार्यालय से सभी के लिए टिकट लेकर आए तथा सभी ने गुफाओं का अवलोकन किया।

अन्दर घुसते ही बाँस के झुण्ड आपका स्वागत करेंगे। गुफाओं में घूमने का अपना अलग आनन्द व अनुभव है। पहाड़ी पर चढ़ने पर चारों तरफ खेतों के नज़ारे सुन्दर लगते हैं। ऊपर से एक नदी दिखती है, जिसमें साफ पानी नज़र जा रहा था। गुफाओं की कुछ मूर्तियाँ खंडित अवस्था में थीं, तो कुछ की हालत ठीक नज़र आ रही थी।

यहाँ से कुछ ही किलो मीटर की दूरी पर भारतवर्ष के प्रमुख प्राचीन नगरों में से एक विदिशा भी है जिसे हिन्दू व जैन धर्म का केन्द्र माना जाता है। जीर्ण अवस्था में बिखरी, टूटी-फूटी खण्डर इमारतें बताती हैं कि यह क्षेत्र ऐतिहासिक, पुरातात्विक व आर्थिक दृष्टि से मध्य प्रदेश का सबसे धनी क्षेत्र रहा होगा। महेश्वर के बाद विदिशा ही इस क्षेत्र का सबसे पुराना नगर माना जाता है। महेश्वर के बाद विदिशा ही पूर्वी मालवा की राजधानी बनी थी। प्राचीन काल में यहाँ यदुवंशी रहे हैं। मान्यता है कि वैदिक काल में महिषासुर मर्दिनी ने यहाँ के महिषासुर राजा को हराया था। राम के छोटे भाई शत्रुघ्न ने अश्वमेध यज्ञ के दौरान यह क्षेत्र जीता था।

उसके बाद हम साँची के स्तूप देखने चल पड़े। अब ये हमारे वापसी के रास्ते में था। कुछ देर में हम साँची के स्तूप पहुँच गए। उससे पूर्व बस खड़ी करके हमने सभी की टिकट ली तथा आगे बढ़े। स्तूप देखने से पहले सभी का खाना तैयार था, जो भोपाल से बनकर आया था। सभी ने पत्थरों पर बैठ कर खाना खाया। खाने में खीर भी शामिल थी। सभी को भूख लगी थी। खाना स्वादिष्ट लगा। खाना खाकर स्तूपों की ओर बढ़े। जिन साँची के

स्तूपों को अब तक विद्यार्थियों ने पाठ्यक्रम में, अखबारों या कभी कभार टेलीविज़न पर देखा होगा, वे ऐतिहासिक इमारतें विद्यार्थियों के सामने थीं। पाठ्यक्रम में शामिल इमारतों को अपने सम्मुख देखकर विद्यार्थियों के चेहरे खिल उठे। वे कौतूहल व उत्सुकता से तेज़ गति से आगे कदम बढ़ा रहे थे।

यूनेस्को विश्व धरोहर में शामिल तथा दो सौ रुपये के भारतीय नोट पर छपे साँची के स्तूप रायसेन जिले के छोटे से गाँव साँची में एक पहाड़ी पर बड़े पार्क में स्थित हैं। इस गाँव के निकट से बेतवा नदी बहती है जो यहाँ की जीवन-रेखा है तथा सांस्कृतिक दृष्टि से भी इसका महत्त्व है। साँची के स्तूपों की विश्वस्तरीय पहचान है। यहाँ कई बौद्ध स्मारक हैं जो तीसरी शताब्दी पूर्व से बारहवीं शताब्दी के बीच के काल के हैं। यहाँ छोटे-बड़े अनेक स्तूप हैं, जिनमें दूसरा स्तूप सबसे बड़ा है। स्तूप को घेरे हुए कई बड़े तोरण भी है। इन पर पत्थरों की अद्भुत नक्काशी, मूर्तियाँ, डिज़ाइन, चित्रकारी कुशलता से की गई है। साँची का मुख्य बड़ा स्तूप सम्राट अशोक ने तीसरी शती ई.पूर्व में बनवाया था। बाद में सम्राट अग्निमित्र शुंग ने जीर्णोद्धार करके इसे और विशाल बना दिया। इसमें अर्ध गोलाकार ईंट निर्मित ढाँचा है, जिसमें भगवान् बुद्ध की मूर्ति के कुछ अवशेष रखे थे। हमने करीब दो घंटे लगाकर इन स्तूपों का अवलोकन किया। बच्चों को गाइड ने विस्तार से समझाया। बच्चों ने महत्त्वपूर्ण बातें कॉपियों पर नोट कीं। सभी का ग्रुप फोटो किया। बच्चों ने सेल्फी ली, फोटो लिए फिर हम अपने ठहराव स्थल की ओर चल दिए।

अगले दिन सुबह खाना खाकर बसों में सवार होकर पुरापाषाणिक आवासीय पुरास्थल पहुँचते हैं जो भोपाल से 45 किलोमीटर दूर दक्षिण पूर्व में है। इसकी खोज वर्ष 1957-1958 में डॉ.विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा की गई थी। भीम बेटका क्षेत्र को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, भोपाल मण्डल ने अगस्त 1990 में राष्ट्रीय महत्त्व का स्थल घोषित किया। इसके बाद जुलाई-2003 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल घोषित किया। ऐसा माना जाता है कि महाभारत के भीम से सम्बन्धित है इसी से इसका नाम भीम बेदका, फिर भीम बेदका पड़ा। ये गुफाएँ मध्य भारत के निचले छोर पर हैं। यहाँ पर अन्य पुरावशेष भी मिले हैं, जिनमें प्राचीन किले की दीवार, लघुस्तूप, पाषण निर्मित भवन, शुंग-गुप्त कालीन अभिलेख, परमार कालीन मन्दिर के अवशेष। एक घंटे के सफर के बाद हम भीम बेटका पहुँचे तो पहले टिकट ली, फिर आगे बढ़े। कठोर पत्थरों पर उगे जंगलों से होते हुए गुफाओं के पास आ गए। पर्यटक पहले से भी यहाँ काफी संख्या में पहुँचे हुए थे। अब उन गुफाओं में थे जो इनके पाठ्यक्रम में शामिल थीं। बच्चे इन गुफाओं को, यहाँ बने शैल चित्रों को गौर से देख रहे थे तथा अपने-अपने मोबाइल से फोटो खींच रहे थे। अलग-अलग गुफाओं में बने चित्रों में कुछ ठीक हालत में थे, तो कुछ धुंधले पड़ गये थे। वक्त की मार से बहुत से चित्र तो मिट भी गए होंगे। इन चित्रों को पुरापाषाण काल से मध्यपाषाण काल के समय का माना जाता है। ये चित्र भारतीय उपमहाद्वीप में मानव जीवन के प्राचीनतम चिह्न हैं। विद्यार्थियों ने यहाँ बहुत कुछ सीखा। बच्चे इन्हें कभी नहीं भूल पाएँगे। पाठ्यक्रम पढ़ते हुए विद्यार्थियों को भीम बेटका या साँची के स्तूप पढ़ते हुए रट्टे नहीं लगाने पड़ेंगे।

उसके बाद हम प्राचीन भोजपुर मन्दिर देखने गए, रास्ते में अनेक जगह तालाबों व झीलों में सफेद कमल के फूलों को देखकर सभी को अच्छा लगा। कुछ बच्चे कह रहे थे कि उन्होंने पहली बार अपनी आँखों से प्रत्यक्ष कमल के फूल खिले हुए देखे हैं। बच्चों ने चलती बस से फोटो भी लिए। हम करीब आधे घंटे में भोजपुर गाँव स्थित भोजेश्वर प्राचीन मन्दिर आ गए। यहीं पर हमारा दोपहर का खाना था। खाना खाकर हम मन्दिर की ओर चले। यह मन्दिर भोपाल से 30 किलोमीटर दूर बेतवा नदी के तट पर विंध्य पर्वतमालाओं के मध्य एक पठार पर स्थित है। मन्दिर का निर्माण तथा इसमें विशाल शिवलिंग की स्थापना धार के प्रसिद्ध परमार राजा भोज ने करवाई थी, जिसकी ऊँचाई 463 मीटर है। भोजपुर शिव मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध यह मन्दिर किसी कारण अधूरा रह गया जो आज भी अधूरा है। मन्दिर के अगले हिस्से में बहुत सी पाषाण मूर्तियाँ हैं। मन्दिर प्रांगण से दूर तक प्राकृतिक नज़ारे दिखते हैं।

अगले दिन भोपाल के जाने माने शासकीय सुभाष उत्कृष्ट विद्यालय में कल्चर एक्सचेंज प्रोग्राम होना था। हम निर्धारित समय पर विद्यालय पहुँच गए। जैसे हमने विद्यालय में प्रवेश किया, स्कूल के प्राचार्य सुधाकर पाराशर, स्कूल स्टाफ ने हमारा स्वागत किया। ऑडिटोरियम में जाते समय सभी को तिलक लगाया गया। खास बात यह

रही कि कुछ नृत्य मध्यप्रदेश तो कुछ हरियाणा की ओर से प्रस्तुत किये गए। भोपाल की छात्राओं ने हरियाणवी डांस करके सबको चौंका दिया। हरियाणा की ओर से कुछ शिक्षकों ने भी शानदार, जानदार व यादगार प्रस्तुतियाँ दीं। विद्यालय की ओर से शिक्षकों ने कुछ बच्चों को सम्मानित किया। बाद में हरियाणा के बच्चों को विद्यालय के बच्चों ने अपना विद्यालय घुमाकर दिखाया। निःसंदेह यह यादगार कार्यक्रम था। शाम को वन विहार घुमाया गया। बच्चों ने पहली बार यहाँ टाइगर अपनी आँखों से देखा। नौ वर्षीय मादा टाइगर का नाम दुर्गा था। जो बाँस के झुरमुट के नीचे खुले में बैठी अपना शिकार खा रही थी। बच्चों ने यहाँ ढेर सारी तितलियाँ, साँप, खरगोश, तेंदुआ, हिरण तथा अन्य जानवर भी देखे। शाम को भोपाल की विशाल झील पर घुमाया गया।

अगले दिन सूर्योदय से पूर्व उठकर मैं चहचहाते हुए पक्षियों के फोटो लेने लगा। झील की तरफ देखा तो गुलाबी रंग के कुछ कमल के फूल खिले नज़र आए। सूर्योदय के साथ ही जब सूरज की किरणें उन पर पड़ी तो कमल पुष्पों का रूप-सौन्दर्य और भी अधिक निखर आया। हरे-नीले पानी में गुलाबी रंग के कमल पुष्प सबका ध्यान आकर्षित कर रहे थे। नहा धोकर, खाना खाकर, बस में सवार हो हम सभी शौर्य स्मारक, इन्दिरा गांधी मानव संग्रहालय, साइंस म्यूजियम देखने गए। शौर्य स्मारक शहीदों, देशभक्तों को समर्पित है तो संग्रहालय हमारी समृद्ध लोक कला, संस्कृति, सांस्कृतिक सम्पदा को सजोये हुए हैं। ये संग्रहालय हमें अतीत में ले जाते हुए हमारे ज्ञान में वृद्धि करते हैं। फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों के लिए तो ये संग्रहालय और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। हर शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों को जहाँ नई ऊर्जा प्रदान करता था, वहीं पर इनके सर्वांगीण विकास में यह अहम भूमिका भी अदा करता था। अन्तिम दिन, 12 तारीख को हम अपना सामान समेट कर रात आठ बजे भोपाल के रानी कमलापति रेलवे स्टेशन पहुँच गए। दस बजकर चालीस मिनट पर मधुर यादों के साथ ढेर सारे अनुभवों, ताउम्र काम आने वाले ज्ञान के साथ वापस घर की ओर हमारा सफर शुरू हो गया।

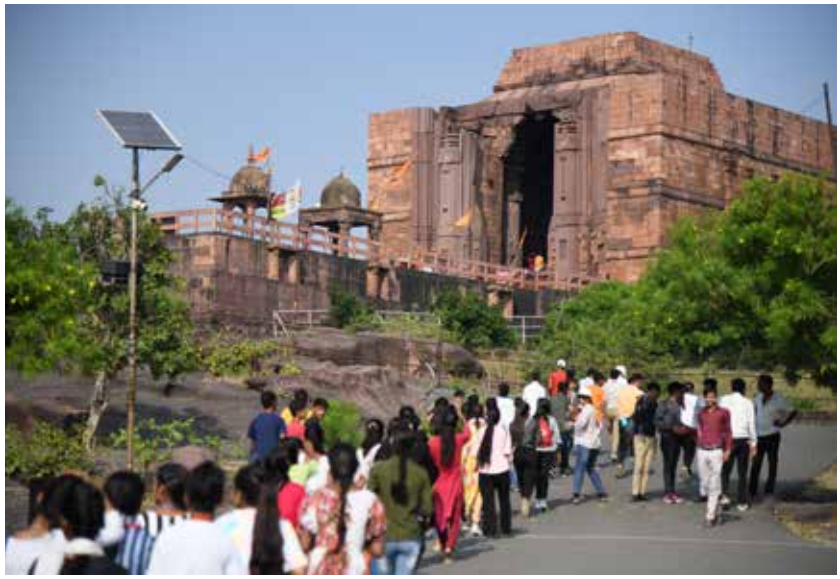

कुल मिलाकर यह यात्रा ज्ञानवर्धक, सार्थक, उपयोगी व यादगार थी। इसके लिए शिक्षा विभाग के अधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

बाल-दिवस पर मेधावी बच्चों को राज्यपाल ने किया सम्मानित

सुदेश रानी

राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने बाल दिवस के उपलक्ष्य पर हरियाणा राजभवन चंडीगढ़ में जिला से शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

श्री बंडारू दत्तात्रेय ने बहुत ही प्रेमपूर्वक बच्चों

से बातचीत कर उन्हें प्रेरित किया। बच्चों का हौसला देखते ही बन रहा था। इस अवसर पर राज्यपाल ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण किया। उनके बाद वहाँ उपस्थित अन्य अधिकारियों अध्यापकों व सभी विद्यार्थियों ने नेहरू जी के चित्र पर पुष्पांलजि अर्पित

करके उन्हें श्रद्धांजलि दी।

राज्यपाल ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के जीवन के बारे में बच्चों से विस्तार से बातचीत की। उन्होंने सभी बच्चों को आशीर्वाद देते हुए उन्हें पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसा बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि बच्चे देश के भावी कर्णधार हैं और राष्ट्र को उनसे बहुत उम्मीदें हैं।

माननीय राज्यपाल द्वारा सम्मानित किए गए पहली से बारहवीं कक्षा के अधिकतर बच्चे वे थे, जिन्होंने पिछली कक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। राज्यपाल महोदय ने हर बच्चे से बात की, उनका परिचय व जीवन का लक्ष्य पूछा। उन्होंने बहुत ध्यान से हर बच्चे की बात सुनी। बाल-दिवस के महत्त्व के बारे में भी कुछ प्रश्न बच्चों से किये, जिनका उत्तर बच्चों ने बहुत अच्छे ढंग से दिया। सार्थक स्कूल के ग्यारहवीं कक्षा के रोहन ने बताया कि राज्यपाल महोदय की सादगी व उच्च विचारों ने वहाँ उपस्थित हर विद्यार्थी को प्रभावित किया। उनसे बात करके जो अनुभव हुआ वह उसे जीवन भर नहीं भुला सकता। उनके एक-एक वाक्य को वहाँ उपस्थित सभी बच्चे बहुत ध्यान से सुन रहे थे। वे एक गुरु की भाँति बच्चों को प्रेरित व प्रोत्साहित कर रहे थे। इसी विद्यालय की छात्रा आँचल ने बताया कि राज्यपाल महोदय ने विद्यार्थियों से इस प्रकार बात की जैसे परिवार का कोई वरिष्ठ सदस्य बच्चों को जीवन जीने का सही तरीका समझा रहा हो। राज्यपाल जी ने कहा कि जीवन में संस्कारों व जीवन मूल्यों का बहुत महत्त्व है। बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ, पदवियाँ हासिल करने से बड़ी बात है अपने भीतर मानवता का भाव रखना। उन्होंने सभी बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। शिक्षक श्री भीम सिंह ने बताया कि राजभवन में जाना विद्यार्थियों के लिए अनूठा अनुभव था। अधिकतर विद्यार्थी पहली बात राजभवन में गए थे, इसलिए कौतूहल से राज्यपाल निवास को देख रहे थे। राज्यपाल महोदय के करकमलों से चॉकलेट व उपहार ग्रहण कर बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा।

पंचकूला जिले के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेक्टर-15, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पिंजौर, सार्थक स्कूल सेक्टर- 12 ए, संस्कृति स्कूल सेक्टर 20 और 26 आदि विद्यालयों के 24 बच्चे इस अवसर पर सम्मानित हुए। जिला शिक्षा अधिकारी, पंचकूला श्री सतपाल कौशिक भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

हिंदी अध्यापिका
राजकीय उच्च विद्यालय, सैक्टर-25, पंचकूला

बाल-संगम भित्ति पत्रिका का विमोचन

करनाल के ब्याना विद्यालय का अनूठा प्रयास, रचनात्मक अभिव्यक्ति को विकसित कर रही है भित्ति पत्रिका

भाषा शिक्षण को प्रायोगिक, रुचिकर और खुद करके सीखने पर आधारित करने के लिए करनाल जिला के गाँव ब्याना स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में बाल संगम भित्ति पत्रिका निकाली जा रही है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर और देस हरियाणा के संपादक डॉ. सुभाष सैनी ने बीते दिनों पत्रिका के कन्या शिक्षा पर केंद्रित दूसरे अंक का विमोचन किया। विमोचन में भित्ति पत्रिका के संपादक मंडल से जुड़े विद्यार्थी तनु, गुरमीत, संजना, रीतू, निशा, सृष्टि, सिमरण, तृषा, साक्षी, आरती, मनप्रीत, मानसी व साक्षी ने सहयोग किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. विकास साल्यान ने भी शिरकत की। मंच संचालन स्कूल के हिन्दी प्राध्यापक अरुण कुमार कैहरबा ने किया। अंग्रेजी प्राध्यापक राजेश सैनी व हिन्दी अध्यापक नरेश मीत ने आए अतिथियों का स्वागत किया।

विद्यार्थियों को लेखन-क्या, क्यों और कैसे? विषय पर संबोधित करते हुए डॉ. सुभाष सैनी ने कहा कि लेखक मधुमक्खी की तरह होता है, जो कि विभिन्न स्थानों से अनुभवों का पराग लेकर सत्य और सौंदर्य का शहद बनाता है। मधुमक्खी द्वारा शहद बनाने की प्रक्रिया और मकड़ी द्वारा जाल बनाने की प्रक्रिया में अंतर है। उन्होंने कहा कि सुबह से शाम तक हमने क्या किया, ऐसे सब विवरणों को तरतीब से लिख लेना ही लेखन नहीं होता है। न ही लेखन ठोस व स्थूल वस्तु का निर्माण करना है। लेखन में लेखक को अपने बाहरी परिवेश के अनुभवों को मानसिक प्रक्रिया से सजाना-सँवारना होता है और उसे कागज़ पर लिखना होता है। दुनिया में हर समय ही लेखक को सोचना पड़ता है। हर लेखक के सामने यही सवाल होता है कि वह क्या लिखे? उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति जन्म से ही प्रतिभाशाली नहीं होता है। लेखक को अपने लेखन कौशल को हमेशा निखारना

होता है। उन्होंने विद्यार्थियों को लिखने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि भित्ति पत्रिका लिखने के लिए मंच है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसमें विद्यार्थियों को बहुत कुछ सीखने का मौका मिलेगा।

हिन्दी प्राध्यापक अरुण कुमार कैहरबा ने कहा कि बाल संगम भित्ति पत्रिका विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करने, उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को विकसित करने, निखारने और सँवारने का काम कर रही है। अध्यापकों के मार्गदर्शन में भित्ति पत्रिका का संपादन पूरी तरह से विद्यार्थियों का समूह करता है। इसके रचनाकार भी विद्यार्थी हैं। भित्ति पत्रिका का पहला अंक स्वतंत्रता आंदोलन पर केन्द्रित था। विमोचित दूसरा अंक कन्या शिक्षा विशेषांक है, जिसमें पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले, फातिमा शेख, पहली चिकित्सक आनंदीबाई जोशी, मदर टेरेसा, लक्ष्मी सहगल, सुचेता कृपलानी, कल्पना चावला, मलाला युसूफजई सहित अनेक महिलाओं के चित्र, जीवन परिचय, कविताएँ आदि हैं। उन्होंने आगामी योजना के बारे में बताया कि तीसरा अंक स्कूल पर केन्द्रित रहेगा।

अरुण कुमार कैहरबा
हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्याना, ज़िला-करनाल, हरियाणा

2023

दिसंबर माह

के त्यौहार व विशेष दिवस

1 दिसंबर- विश्व एड्स दिवस
3 दिसंबर- विश्व दिव्यांग दिवस
4 दिसंबर- भारतीय नौसेना दिवस
7- 24 दिसंबर- अन्तरराष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव
9 दिसंबर- अन्तरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस
10 दिसंबर- मानव अधिकार दिवस
14 दिसंबर- राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
16 दिसंबर- विजय दिवस
17 दिसंबर- गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस
25 दिसंबर- क्रिसमस दिवस
26 दिसंबर- शहीद ऊधम सिंह जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

The RPwD Act 2016: A Paradigm Shift in Disability Law

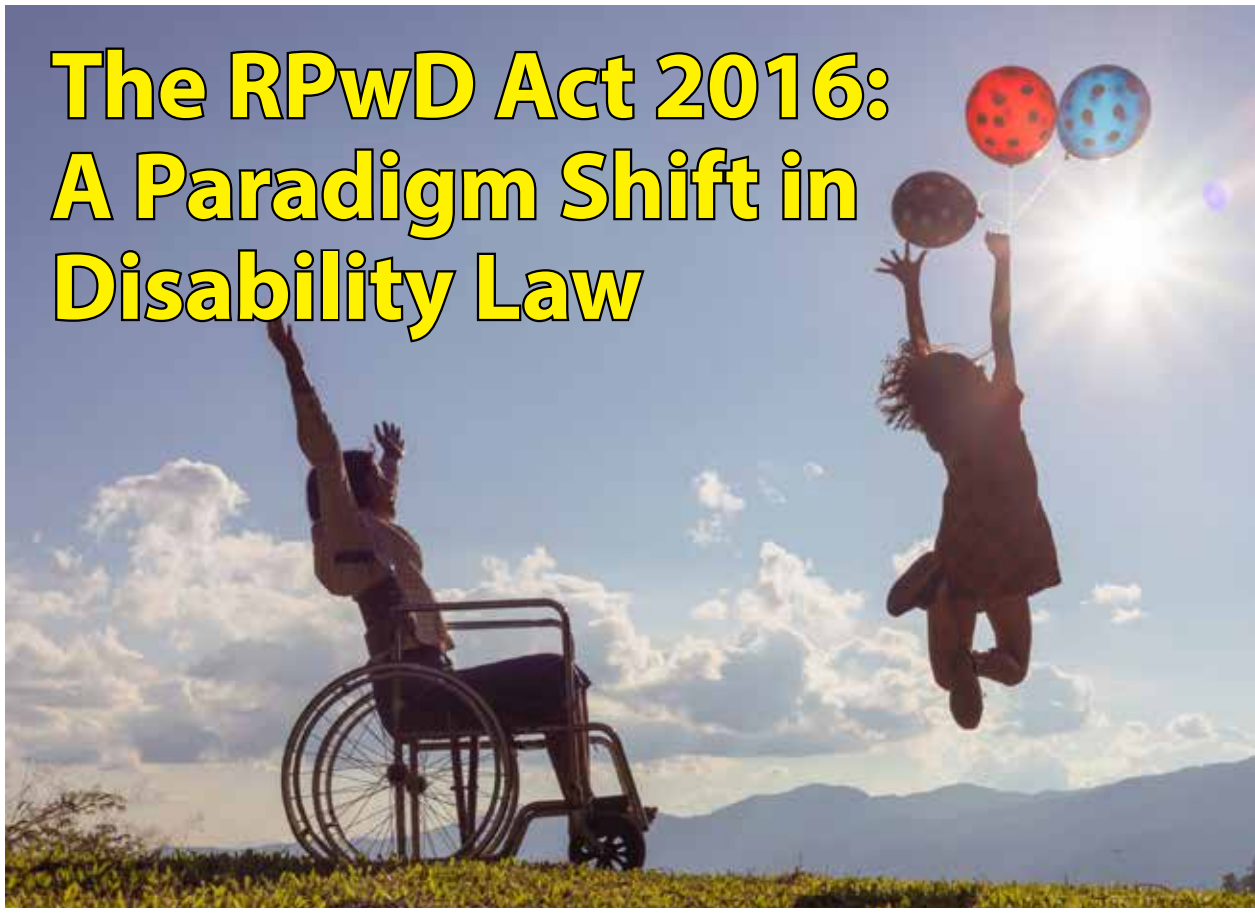

Dr. Rajeev Vats

The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016 (RPwD Act 2016)is a landmark legislation that aims to protect and promote the rights and dignity of persons with disabilities in India. The Act was enacted to give effect to the United Nations Convention on the Rights of Persons with Disabilities, which India ratified in 2007. The Act replaces the earlier Persons with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of Rights and Full Participation) Act, 1995,

which was considered inadequate and outdated in addressing the needs and challenges of persons with disabilities in the 21stcentury.

The Act has several salient features that make it a progressive and inclusive law. Some of these are:

- The Act expands the definition of disability from seven to 21 conditions, covering a wide range of physical, mental, intellectual, and sensory impairments. The Act also recognizes that disability is an evolving and dynamic concept, and empowers the central government to notify any other condition as a specified disability.
- The Act adopts a rights-based approach and recognizes the inherent dignity, autonomy, and equal worth of persons with disabilities. The Act prohibits discrimination based on disability and mandates equality of opportunity, full and effective participation, and inclusion in society, respect for difference and acceptance of disability as part of human diversity, and accessibility and reasonable accommodation.
- The Act enshrines various rights and entitlements of persons with disabilities, such as the right to education, employment, social security, health, rehabilitation, culture, recreation, and sporting activities. The Act also provides for special provisions for persons with benchmark disabilities (those with at least 40% of any specified disability) and persons with disabilities with high support needs (those who require intensive support or assistance to perform daily activities).
- The Act imposes duties and responsibilities on the appropriate governments (central and state governments) to take measures to ensure the realization of the rights of persons with disabilities. These include awareness campaigns, accessibility standards, access to transport, information and communication technology, consumer goods, human resource development, social audit, etc.
- The Act provides for the registration of institutions for persons with disabilities and grants to such institutions. The Act also lays down

the procedure for certification of specified disabilities by designated authorities. The Act also establishes the Central and State Advisory Boards on Disability and the District Level Committee to advise, monitor, and review the implementation of the Act.

- The Act also provides for the appointment of the Chief Commissioner and the State Commissioners for Persons with Disabilities, who are vested with the powers of a civil court, to safeguard the rights of persons with disabilities and redress their grievances. The Act also empowers the National and State Human Rights Commissions to monitor the implementation of the Act.

The Act is a significant step towards the empowerment and inclusion of persons with disabilities in India. It reflects the changing paradigm of disability from a medical and welfare model to a social and human rights model. The Act also aligns India's legal framework with the international standards and obligations under the UN Convention on the Rights of Persons with Disabilities. The Act is expected to create a conducive environment for persons with disabilities to enjoy their rights and participate in all spheres of life with dignity and respect.

Initiatives by the Government of Haryana

The implementation by the Government of Haryana considering the RPwD Act 2016 is a complex and ongoing process that involves various stakeholders and measures. Some of the initiatives and achievements of the State Government are:

» The State Government has established the State Commissioner for Persons with Disabilities, a statutory body that monitors the implementation of the RPwD Act 2016 in the state. The Commissionerate is a quasi-judicial

body that can exercise the powers of a civil and criminal court to safeguard the rights of persons with disabilities and redress their grievances.

- The State Government has also constituted the State Advisory Board on Disability, which advises, monitors, and reviews the policies and programmes for persons with disabilities in the state. The Board consists of representatives from the government, civil society, experts, and persons with disabilities.
- The State Government has issued notifications and circulars to implement various provisions of the RPwD Act 2016, such as reservation in education, employment, promotion, allocation of land, accessibility standards, identification of posts, etc.
- The State Government has also issued guidelines for the registration and grant of institutions for persons with disabilities.
- The State Government has launched several schemes and programmes for the welfare and empowerment of persons with disabilities, such as pensions, scholarships, loans, skill development, assistive devices, etc. The State Government has also implemented the Accessible India Campaign, which aims to make public buildings, transport and information and communication technology accessible for persons with disabilities.
- The State Government has taken steps to promote the health and rehabilitation of persons with disabilities, such as setting up district disability rehabilitation centres, early intervention centres, special schools, etc.
- The State Government has also appointed designated authorities for the certification of specified disabilities and issued disability certificates to eligible persons.
- The State Government has also encouraged the participation and inclusion of persons with disabilities in various fields, such as sports, culture, recreation, etc.
- The State Government has organized and supported various events and activities for persons with disabilities, such as State and National-level competitions, cultural festivals, awareness campaigns, etc.

These are some of the initiatives fulfilled by the Government of Haryana in light of the RPwD Act 2016. However, there is still scope for improvement and challenges to overcome, such as ensuring the effective implementation and enforcement of the Act, addressing the gaps and barriers in the existing policies and programmes, enhancing the coordination and collaboration among the various departments and agencies, ensuring the participation and consultation of persons with disabilities and their organizations, etc. The State Government continues to work towards the realization of the rights and dignity of persons with disabilities in the State.

Assistant Director
(Academic Cell)
Director General Secondary
Education, Panchkula

You turn into what you tune into...

Dr. Himanshu Garg

Unhappiness spreads more easily than a physical disease. Are you happy with what you are doing ? You chose it willingly or you are doing it under pressure. Either stop doing what you are doing or drop the negativity that your mind has created around you. Is there any unwillingness? Express your feelings freely. Did you know that the negative energy you spread is so harmful. Observe both your mental and emotional levels. The subconscious mind is absorbing every little thing we experience.

Once a man was in a temporary job. He had a strong desire for a regular job. It was his belief that he will be truly happy after having a regular job. After some time, he became regular. He became happy but his happiness did not last for long. Then he started desiring a promotion. And like this he always remained dissatisfied with his life. Once he was sitting in a garden with a disappointed heart. A Saint passed from that way and he analyzed his situation. The Saint approached him and showed him the row of roses in that garden. He asked him to pluck the best rose from the flower bed. But the condition was that he cannot go back. The man saw many beautiful roses in the row. But when we wanted to pluck the rose, his mind was distracted by his looking at another better rose. He kept on moving like this and reached the end of the row. There were only dry and small roses remaining and he chose one of such roses. He presented that rose before the Saint. Then the Saint revealed the fact that this garden is considered as our life. We have a lot of happy moments in life. But in the desire of big celebrations, we lose those small special moments. As a result, we lose the chance to celebrate our life. We must celebrate each and every happy moment of our life with full enthusiasm.

Whether your job is tedious or someone about you is irritating or dishonest, all these are irrelevant. Only your thoughts about the situation around you are justified. If you are negative, you are destroying your present by your own thoughts. The people, who are in a deeply negative state are destroying nature. It is unbelievable but a fact. Unhappiness is polluting not only your inner soul but also the people around you, in fact the whole human society. Now judge your situation. Are you polluting the world or cleaning the mess? If we clear our inner pollution, then they will also cease to create outer pollution and spread happiness everywhere. Everything has an impact on our being. What we think, eat, watch or listen is what our reality becomes. Even every place has a vibration. The walls are storing the past, present and future. May we begin to raise our vibrations and surround ourselves with only the best.

Asstt. Professor,
Govt. College for Women, Jind

Career in Archaeology

Embarking on a career in archaeology in India opens up a fascinating journey through time, unearthing the rich tapestry of the nation's history. Archaeologists in India play a crucial role in deciphering the past, connecting the dots between ancient civilizations and modern societies. This profession combines science, history, and cultural exploration, offering a unique blend of academic rigor and fieldwork.

To delve into the world of Indian archaeology, one must first understand the diverse historical landscape that the country offers. India boasts a history spanning thousands of years, marked by the rise and fall of numerous civilizations, each leaving its imprint on the land. From the mighty Indus Valley Civilization to the great dynasties like Maurya, Gupta, and the Mughals, India's archaeological sites are treasure troves waiting to be explored.

The educational path to becoming an archaeologist in India typically involves pursuing a bachelor's degree in archaeology or related fields such as history or anthropology. Several universities and institutions across the country offer undergraduate programs

with a focus on archaeology. A strong foundation in history, anthropology, and cultural studies is essential for anyone aspiring to unravel the mysteries of India's past.

Post-graduation, many choose to specialize in a specific era or region, honing their expertise. Specializations may range from maritime archaeology along the coasts to exploring ancient cave systems in central India. This diversity allows archaeologists to contribute to a wide array of research areas, ensuring a dynamic and engaging career.

Fieldwork forms a crucial aspect of an archaeologist's journey. India's archaeological sites are spread across its vast expanse, from the Himalayan foothills to the southern tip of the subcontinent. Excavations in places like Hampi, Khajuraho, and the Rakhigarhi site provide hands-on experience, allowing archaeologists to directly interact with historical artifacts and structures. The thrill of uncovering artifacts buried for centuries, piecing together the puzzle of the past, is an unparalleled experience.

Apart from traditional excavation methods, modern technology has become an integral part of archaeological exploration in India. Ground-penetrating radar, LiDAR (Light Detection and Ranging), and GIS (Geographic Information System) are employed to enhance the precision and efficiency of archaeological surveys. This integration of technology not only expedites the process but also opens up new avenues for research and analysis.

One of the challenges in the field of archaeology in India is the delicate balance between preservation and development. Rapid urbanization and infrastructure projects often encroach upon historical sites, putting them at risk. Archaeologists find themselves not only as researchers but also as advocates for the preservation of cultural heritage, working to strike a balance between the demands of progress and the need to safeguard the past.

A career in Indian archaeology is not confined to academia. Many archaeologists find employment in government agencies, museums, and cultural institutions. The Archaeological Survey of India (ASI), established in 1861, is a key player in the preservation and exploration of India's historical sites. Working

with the ASI provides opportunities to contribute to national heritage management and policy formulation.

Public outreach is another facet of an archaeologist's role. Communicating research findings to the general public fosters a deeper appreciation for India's history. This may involve conducting workshops, lectures, or contributing to documentaries that bring the past to life. By bridging the gap between academia and the public, archaeologists contribute to a broader understanding of cultural heritage.

Networking and collaboration are vital in the field of archaeology. Collaborative projects with international teams, participation in conferences, and publication of research findings in peer-reviewed journals contribute to the global discourse on historical studies. The interconnectedness of the archaeological community allows for the exchange of ideas, methodologies, and findings, enriching the collective understanding of our shared human history.

Financial considerations can be a concern for budding archaeologists, as funding for research projects may be limited. However, grants, fellowships, and collaborations with institutions can provide avenues for financial support. Passion for the subject often drives individuals to overcome these challenges, as the intrinsic value of uncovering the past transcends monetary concerns.

In conclusion, a career in archaeology in India is a multidimensional journey through time, culture, and discovery. It requires a blend of academic acumen, fieldwork skills, technological proficiency, and a passion for unraveling the mysteries of the past. From the plains of the Indus to the peaks of the Himalayas, archaeologists in India contribute significantly to our understanding of humanity's shared heritage. As we explore various career choices, let's reflect on the timeless journey that is archaeology and the endless possibilities it offers for those who seek to uncover the secrets buried beneath the sands of time.

Navigating Indian Winter Diseases: A Seasonal Health Outlook

As the temperature drops across the diverse landscapes of India, winter brings relief from the scorching heat but introduces a unique set of health challenges. Understanding and preparing for the prevalent winter diseases is crucial for maintaining well-being during this season.

1. Respiratory Infections:

One of the most common health concerns during Indian winters is the rise in respiratory infections. The drop in temperature creates an environment conducive to viruses like influenza, leading to an increased incidence of colds, flu, and bronchitis. Dry air exacerbates respiratory discomfort, emphasizing the importance of preventive measures such as regular hand washing, vaccination, and maintaining indoor humidity levels.

2. Asthma Exacerbation:

For individuals with asthma, winter poses specific risks. Cold air can trigger asthma symptoms, causing increased respiratory distress. Proper management involves using preventive inhalers, staying warm, and avoiding exposure to extreme cold. Education about recognizing early signs of an asthma attack is vital for prompt intervention.

3. Seasonal Allergies:

Winter allergies, often overlooked, are triggered by indoor allergens such as dust mites, pet dander, and mold. Symptoms include sneezing, itching, and nasal congestion. Mitigating these allergies involves regular cleaning, using air purifiers, and ensuring proper ventilation in indoor spaces.

4. Joint Pains and Arthritis:

Cold weather exacerbates joint pain, particularly for those with arthritis. Managing these conditions requires strategies to maintain joint warmth, including appropriate clothing, regular exercise, and staying hydrated. The winter months demand extra attention to joint health to minimize discomfort and maintain mobility.

5. Vector-Borne Diseases:

While mosquito-borne diseases are more associated with the monsoon,

some regions experience a resurgence in winter. Stagnant water in cooler temperatures becomes a breeding ground for mosquitoes, leading to continued cases of diseases like dengue and chikungunya. Ongoing preventive measures, including mosquito repellents and eliminating breeding sites, are crucial in curbing the spread of these diseases.

6. Hypothermia and Frostbite:

In the northern regions of India, where temperatures can plummet, hypothermia and frostbite become genuine concerns. Adequate clothing, staying dry, and minimizing exposure to extreme cold are essential for preventing these cold-related conditions. Awareness of the symptoms and prompt action are crucial in mitigating the risks associated with prolonged exposure to severe cold.

7. Gastrointestinal Infections:

Winter doesn't eliminate the risk of gastrointestinal infections. Contaminated water and food can still lead to conditions like gastroenteritis. Practicing good hygiene, consuming

safe water and food, and maintaining sanitation are crucial in preventing these infections. Awareness of the potential risks associated with winter-related food and waterborne illnesses is vital for maintaining digestive health.

8. Vitamin D Deficiency:

Despite sunny days, winter contributes to vitamin D deficiency due to reduced sunlight exposure. This deficiency can lead to various health issues, including weakened bones. Combating this requires dietary supplements and intentional efforts to spend time outdoors during daylight hours. Public awareness campaigns about the importance of vitamin D and its sources can play a significant role in addressing this concern.

Conclusion:

As winter settles across India, it brings a nuanced set of health challenges that demand attention and proactive measures. From respiratory infections to cold-related conditions and ongoing risks of vector-borne diseases, a comprehensive approach to health is essential. Public awareness, education, and timely medical intervention collectively form the pillars of safeguarding individuals and communities during this season. By understanding and addressing the specific health risks associated with Indian winters, we can navigate the season with resilience and well-being.

Significance of Gurpurab

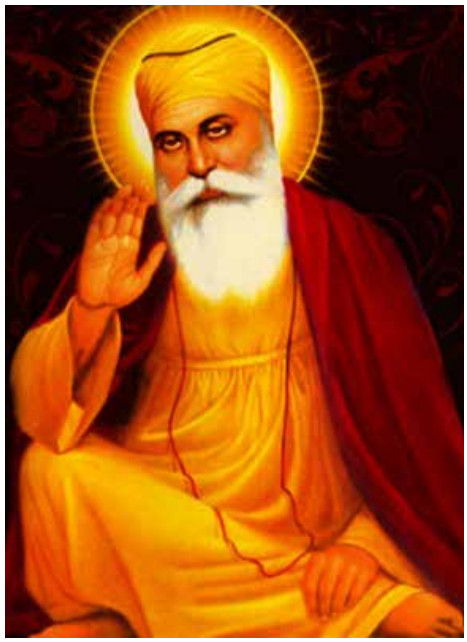

Gurpurab, also known as Guru Nanak Jayanti, holds immense significance in Sikhism, commemorating the birth anniversary of Guru Nanak Dev Ji, the founder of Sikhism and the first of the ten Sikh Gurus. This auspicious occasion is celebrated with great fervor and devotion by millions of Sikhs around the world. The significance of Gurpurab extends beyond religious boundaries, encompassing spiritual, cultural, and social dimensions.

Guru Nanak Dev Ji, born in 1469 in the town of Nankana Sahib (now in Pakistan), was a visionary and a spiritual leader whose teachings laid the foundation for Sikhism. His life and teachings emphasized oneness, equality, compassion, and devotion to God. Gurpurab serves as a time for Sikhs to reflect on Guru Nanak's profound teachings and to renew their commitment to living a life guided by these principles.

One of the central tenets of Guru Nanak's teachings is the concept of "Ik Onkar" or "One God." He emphasized the unity of all humanity, regardless of caste, creed, or gender. Gurpurab serves as a reminder of this universal message, promoting harmony and tolerance among people of different faiths and backgrounds.

The celebrations of Gurpurab typically begin with Akhand Path, a continuous reading of the Guru Granth Sahib, the holy scripture of Sikhism. This reading is done in the days leading up to the main celebration day. Sikhs also engage in kirtan (devotional singing) and participate in processions known as Nagar Kirtan, where the Guru Granth Sahib is carried in a decorated palanquin through the

streets, accompanied by singing and chanting.

The langar, a community kitchen that provides free meals to all, is an integral part of Gurpurab celebrations. This practice underscores the Sikh principle of seva (selfless service) and equality, as people from all walks of life, regardless of their social or economic status, come together to share a meal. Gurpurab serves as a poignant reminder of the importance of selfless service and compassion towards others.

Beyond its spiritual and cultural significance, Gurpurab also holds social relevance. It provides an opportunity for Sikhs to strengthen community bonds, fostering a sense of unity and solidarity. The celebrations often include charitable activities, such as blood donation camps, tree planting drives, and community service projects, reflecting the Sikh commitment to social welfare.

Moreover, Gurpurab is a time for self-reflection and spiritual introspection. Sikhs use this occasion to assess their own adherence to the principles laid down by Guru Nanak and to renew their commitment to leading a righteous and compassionate life. The celebrations serve as a spiritual rejuvenation, inspiring individuals to strive for personal growth and moral integrity.

In conclusion, Gurpurab is a multifaceted celebration that goes beyond religious observance. It is a time to commemorate the life and teachings of Guru Nanak Dev Ji, embrace the principles of oneness and equality, engage in selfless service, strengthen community bonds, and foster spiritual growth. The significance of Gurpurab resonates not only within the Sikh community but also holds universal relevance, promoting values that are essential for a harmonious and compassionate world.

A World in Pieces

From the continental drift,
To man's wars and rifts,
We have been drifting apart.
From beginning to start,
Mankind with broken hearts.
Not heeding science or art.

Lost souls torn asunder,
Monumental blunders.
Yet no one surrenders.
Days of dark foreboding,
Storm clouds and thunder.
Where are we headed,
I wonder?

Oh can we not ourselves teach?
To be attached yet detached,
Like the enlightened one told,
In body, yet in soul.
Not a world in pieces,
But united in peace.

Try to emulate Buddha,
In parts, if not whole.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Significance of Gita Jayanti

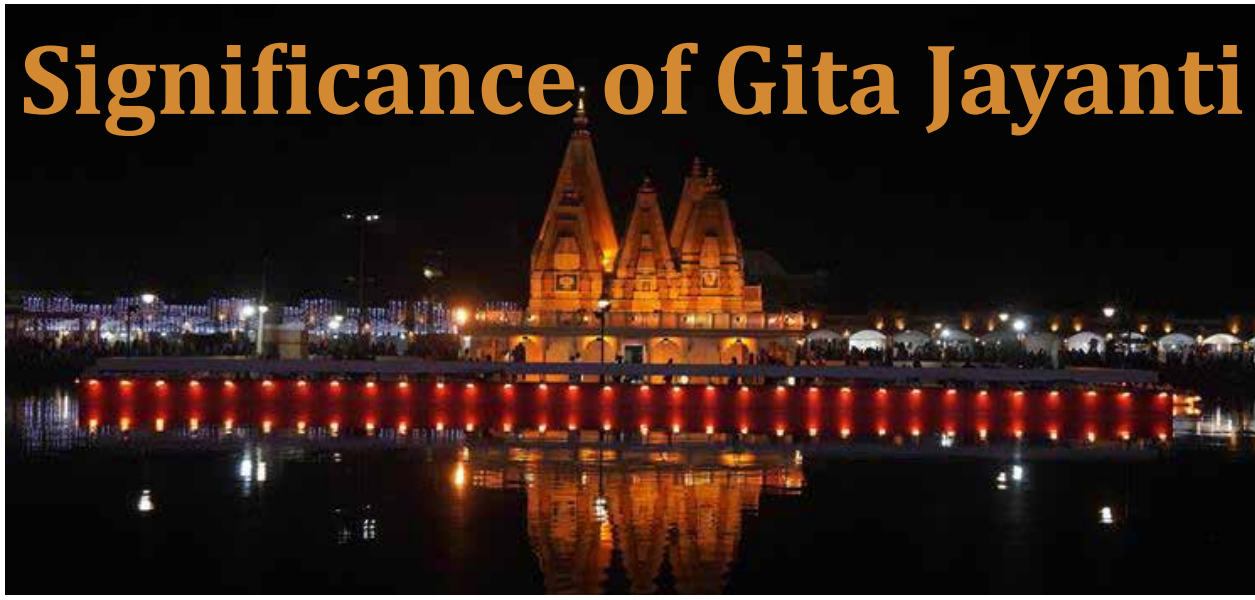

Gita Jayanti, the auspicious day that marks the birth of the Bhagavad Gita, holds immense significance in Hinduism and beyond. Comprising around 700 verses, the Bhagavad Gita is a sacred scripture that forms part of the Indian epic, Mahabharata. It is a conversation between Lord Krishna and the warrior prince Arjuna, taking place on the battlefield of Kurukshetra. Gita Jayanti is celebrated on the Ekadashi of the Shukla Paksha (bright fortnight) of the Margashirsha month in the Hindu calendar, usually in December.

1. **Philosophical Wisdom:** The Bhagavad Gita is a profound philosophical and spiritual discourse that delves into various aspects of life, duty, and righteousness. It addresses the moral dilemmas faced by individuals and provides guidance on how to navigate through the complexities of life.
2. **Universal Relevance:** Despite its roots in Hinduism, the teachings of the Bhagavad Gita are universal and applicable to people of all faiths and walks of life. The themes of duty, righteousness, and the path to self-realization resonate across cultural and religious boundaries.
3. **Pathways to Liberation:** The Gita outlines different paths to spiritual realization, emphasizing the importance of selfless action (Karma Yoga), devotion (Bhakti Yoga), and knowledge (Jnana Yoga). It serves as a comprehensive guide for individuals seeking a deeper understanding of their existence and the ultimate purpose of life.
4. **Ethical and Moral Guidance:** The Gita imparts ethical and moral lessons, advocating for righteousness and justice. Arjuna's moral dilemma on the battlefield reflects the internal conflicts individuals face in upholding principles while navigating worldly responsibilities.
5. **Inner Conflict Resolution:** Gita Jayanti is a reminder of the inner battles individuals encounter daily. Arjuna's inner conflict and Lord Krishna's guidance symbolize the eternal struggle between right and wrong, duty and desire, providing insights into effective conflict resolution.

6. Leadership and Decision-Making: The Bhagavad Gita is a manual for leadership and decision-making. Arjuna, as a leader, faces the responsibility of leading his army in a righteous war. The Gita's teachings guide leaders in making ethical decisions while balancing their duties.

7. Devotion to God: Gita Jayanti encourages devotion to God as a means of achieving spiritual growth. The concept of surrendering to the divine will and performing one's duties without attachment is a central theme, emphasizing the importance of humility and faith.

8. Yoga and Meditation: The Gita lays the foundation for various forms of yoga, including meditation. It teaches the importance of self-discipline and concentration, leading to a focused mind and a deeper connection with the divine.

9. Celebration of Wisdom: Gita Jayanti is a celebration of wisdom, knowledge, and the timeless teachings embedded in the Bhagavad Gita. It serves as an annual reminder for individuals to revisit these teachings, reflect on their own lives, and strive for personal and spiritual growth.

10. Cultural and Spiritual Heritage: The celebration of Gita Jayanti contributes to the preservation and promotion of India's rich cultural and spiritual heritage. It reinforces the importance of passing down these ancient scriptures to future generations, ensuring their continued relevance.

In conclusion, Gita Jayanti is not just a religious observance but a celebration of timeless wisdom that transcends religious and cultural boundaries. It provides guidance for leading a righteous life, resolving inner conflicts, and achieving spiritual enlightenment, making it a significant and revered occasion for millions around the world

The Echoes of Emptiness

She lay weeping where you had left her,
Her friends watching over her murmured.
But she made no move and didn't reply.
It was like her entire life had left her side.

Like an empty room devoid of life,
No sound, no movement, no strife.
No cries or laughter to be heard,
No love or hate, not even a word.

The deafening silence echoed like a tomb,
A deep void that engulfed all her gloom.
And even though you weren't in the room
She stared from dawn till the shadows loomed.

A badly broken heart and shattered dreams,
Intense pain, tears, but no sound or screams,
Emanated from her dry, parched, empty throat.
Like a ship that's shelled but somehow still afloat.

Empty was the raw void you left within her soul.
A hollow shell, a wound, a gash, a gaping hole.
No joy, hope, or light could ever its way find,
To illuminate the barren wasteland of her mind.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

"The Enchanted Pencil"

Once upon a time in the vibrant town of Chandanpur, nestled between rolling hills and meandering rivers, there lived a young girl named Anaya. Anaya was a bright and curious student at the local government school, where she eagerly attended classes each day. However, there was something quite extraordinary about Anaya – she possessed a magical pencil.

This enchanted pencil had been a gift from her grandmother, who claimed it had been passed down through generations in their family. Anaya's grandmother had told her that the pencil held the power to bring drawings to life. At first, Anaya was skeptical, but one day, as she doodled a playful elephant something incredible happened – the elephant jumped off the page and started dancing around the room.

From that day forward, Anaya's enchanted pencil became her most cherished possession. She kept it a

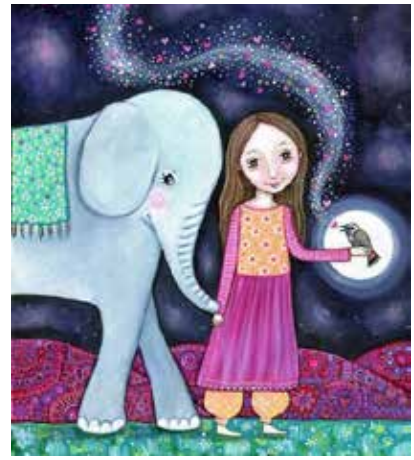

secret, sharing the magical world it created only with her closest friend, Arjun. The two friends spent their afternoons exploring the wonders that Anaya's pencil could create.

One sunny afternoon, as Anaya and Arjun sat beneath the ancient banyan tree in the school courtyard, they decided to draw a magical adventure. Anaya sketched a door that opened to a world filled with candy-colored clouds and talking animals, and together, they stepped through.

In this enchanting world, they encountered a wise old owl named Ojas who spoke in riddles and a mischievous monkey named Mithun who loved playing pranks. The friends laughed, danced, and even helped a group of friendly sprites organize a

grand celebration.

However, the magical world was not all fun and games. Anaya and Arjun soon discovered that a wicked sorceress named Kamini was spreading darkness across the land. With the guidance of Ojas, the wise owl, they learned that the only way to defeat Kamini was to find the legendary Crystal of Light hidden deep within the Enchanted Forest.

The journey to the Enchanted Forest was fraught with challenges. They traversed through dense jungles, crossed treacherous rivers, and faced riddles that tested their wit. Along the way, they met new friends like Tara, a brave tiger, and Neel, a playful river spirit. Together, they formed a team to overcome the obstacles in their path.

As they neared the heart of the Enchanted Forest, they encountered magical creatures guarding the Crystal of Light. The creatures, however, were not hostile. They explained that only those with pure hearts and a genuine desire to protect the world could access the crystal's power.

Anaya and her friends passed the test, and the Crystal of Light bestowed upon them a radiant energy that filled their beings with courage and strength. Armed with this newfound power, they set out to confront Kamini and free the magical world from her dark influence.

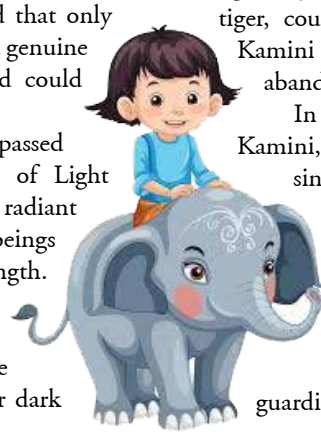

The final battle against Kamini was fierce. The sorceress unleashed dark spells and summoned shadowy creatures, but Anaya, Arjun, and their friends stood united. Anaya, with her magical pencil, drew a shield of light that protected them from Kamini's dark magic. Arjun, guided by Tara the tiger, courageously confronted Kamini and convinced her to abandon her wicked ways.

In a surprising twist, Kamini, touched by the sincerity of Arjun's words, chose to change her path. With the Crystal of Light's healing energy, Kamini transformed into a guardian of the enchanted world, using her magical abilities to undo the darkness she had unleashed.

As a reward for their bravery and compassion, the magical world gifted Anaya and Arjun with a special token – a golden key that could transport them to the enchanted realm whenever they desired. With gratitude in their hearts, they bid farewell to their new friends, promising to return whenever the need arose.

Back in the familiar surroundings of Chandanpur, Anaya and Arjun continued to attend their school with a newfound appreciation for the magic that education could bring to their lives. Anaya's enchanted pencil remained a cherished secret, a reminder that even in the ordinary, there was extraordinary potential waiting to be discovered.

The tale of Anaya and her magical adventures spread throughout the town, inspiring other children to dream big and find the magic within themselves. The school courtyard, once a simple gathering place, became a hub of creativity and imagination as children shared stories, drawings, and dreams.

And so, in the heart of Chandanpur, where hills whispered stories and rivers carried the wisdom of ages, the magic of Anaya's enchanted pencil continued to thrive, lighting up the lives of Indian school children with the boundless possibilities that education and imagination could unlock.

Amazing Facts

1. **Gorillas are considered apes, not monkeys. The way to distinguish between an ape and a monkey is that apes do not have tails.**
2. Influenza caused over twenty-one million deaths in 1918.
3. English sailors were referred to as "limeys" because sailors added lime juice to their diet to combat scurvy.
4. Ukrainian people celebrate Christmas on January 7th, which is the Orthodox Christmas Day.
5. Early Romans used to use porcupine quills as toothpicks.
6. The longest human beard on record is 17.5 feet, held by Hans N. Langseth who was born in Norway in 1846.
7. Honey is used sometimes for antifreeze mixtures and in the center of golf balls.
8. The size of a raindrop is around 0.5 mm - 2.5 mm, and they fall from the sky on average 21 feet per second.
9. In the United States, the first cookbook was published in 1796 and it contained a recipes for watermelon rind pickles.
10. The word "walkman" was included in the Oxford English Dictionary in 1986.
11. A headache and inflammatory pain can be reduced by eating 20 tart cherries.
12. In 1884, Dr. Hervey D. Thatcher invented the milk bottle.
13. Some Ribbon worm will eat themselves if they cannot find food. This type of worm can still survive after eating up to 95% of its body weight.
14. The only 15 letter word that can be spelled without repeating a letter is "uncopyrightable."
15. Singer Chaka Khan came out with a line of chocolates called "Chakalates."
16. The scarlet tanager, a songbird native to Illinois, can eat as many as 2,100 gypsy-moth caterpillars in one hour.
17. To make one raindrop of water, it takes approximately a million cloud droplets.
18. At 120 miles per hour, a Formula One car generates so much downforce that it can drive upside down on the roof of a tunnel.
19. The smallest bone in the human body is the stapes bone which is located in the ear.
20. India used to be the richest country in the world until the British invasion in the early 17th Century.
21. Some African tribes refer to themselves as "motherhoods" instead of families.
22. Between 1902 and 1907, the same tiger killed 434 people in India.
23. In Russia, when flowers are given for a romantic occasions, flowers are given in odds numbers as even number of flowers is given at funerals only.
24. Next to man, the porpoise is the most intelligent creature on earth.
25. The hippopotamus has the capability to remain underwater for as long as twenty-five minutes.
26. The Australian box-jellyfish has eight eyes.
27. A sheep, a duck and a rooster were the first passengers in a hot air balloon.
28. The liquid inside young coconuts can be used as substitute for blood plasma.
29. There are more than 2,000 different varieties of cheese in the world.

https://greatfacts.com

1. What capital city of the Indian state of Madhya Pradesh became famous for the 1984 gas poisoning disaster at Dow Chemicals' Union Carbide plant? **Bhopal**
2. What, according to Forbes magazine in 2011 "...achieved in 7 years what the CIA could not in 60, i.e., knowing what 800million people think, read and listen to..." ? **Facebook**
3. The French term ligne (equating to 'line' in English) is used by makers of watches, buttons and hats as an expression of: Size; Hardness; Quality; or Circular perfection? **Size**
4. The international SOLAS treaty, passed two years after after the 1912 Titanic sinking, stands for what? **Safety Of Life At Sea**
5. The word husband is derived from the ancient Old Norse meanings of 'house' and what activity: Farming; Hunting; Fighting; or Child-rearing? **Farming**
6. Who wrote The Stepford Wives, Rosemary's Baby, and The Boys from Brazil? **Ira Levin**
7. Name the controversial guest character, subject to European extradition proceedings, appearing in the 500th edition of The Simpsons TV animation series? **Julian Assange**
8. Cymraeg refers to what nation's language, in its own language? **Wales/Welsh**
9. The European/Asian slow worm (Anguis) is what sort of animal: Snake; Lizard; Eel; or Earthworm? **Lizard**
10. Spell the surname of the notable German writer and philosopher: Nietzch; Neitsche; Nietzsche; or Nietzche; or Neitzche? **Nietzsche**
11. Piscine Molitor Patel is better known by what highly abbreviated name, being the central character of an eponymously titled novel? **Pi**
12. SOPA, the 2011/12 USA bill addressing internet copyright infringement stands for what? **Stop Online Piracy Act**
13. Name the UK government minister in the news in 2012 for his initiatives for schools bible distribution and a new royal yacht? **Michael Gove**
14. The Venetian island of Murano is noted for its centuries-old traditional manufacture of what material in decorative form? **Glass**
15. 'Guerilla' street art attributed to 'Banski' became a notable feature of what capital city in 2012? **Moscow**
16. The fashionable Belstaff clothing label was founded in Staffordshire UK in 1924 initially to produce protective waterprooof clothing for: Fishermen; Motorcyclists; Policemen; or Deep-sea divers? **Motorcyclists**
17. 'Data Pool 3' refers to millions of documents provided to police investigators by what organization? **News Corporation**
18. What mixed drink takes its name from the Spanish for 'bleeding'? **Sangria**
19. What instrument is the basis of the occupational name for a stringed instrument maker, notably of violins and guitars? **Lute**
20. The printing/publishing term 'vox nihili' referring to a useless or redundant word, especially from an error, literally means what? **Voice of nothing**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-423-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय,
सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का अक्टूबर-नवम्बर 2023 अंक प्राप्त हुआ। शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा प्रकाशित 'शिक्षा सारथी' को सभी पाठक बड़े उत्साहित होकर पढ़ते है। पीएम श्री विद्यालय पर आधारित यह विशेषांक काफी लाभकारी रहा। उपयोगी जानकारी संग्रह लिए हुए इस अंक ने शिक्षक वर्ग में उत्साह एवं विश्वास का संचरण किया है। 'बाल सारथी' की सभी रचनाएँ बच्चों का मनोरंजन तो करती ही हैं, साथ ही उन्हें बहुत-सी ज्ञान-विज्ञान की जानकरी भी रोचक ढंग से प्रदान करती हैं। 'शिक्षा सारथी' के पूरे परिवार को हृदय से धन्यवाद। इस विशेषांक के लिए समस्त संपादन मण्डल को हार्दिक साधुवाद प्रेषित करती हूँ।

रेणु शर्मा
जेबीटी अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय,नंगला गुजरान
जिला-फरीदाबाद, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय,
सादर नमस्कार।

'पीएम श्री विद्यालयों' पर केंद्रित 'शिक्षा सारथी' का पिछला अंक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह जानकर गर्व हुआ कि हरियाणा प्रदेश को 252 पीएम श्री विद्यालयों की सौगात मिली। ओमप्रकाश कादयान द्वारा लिखित लेख 'सुनहरे भविष्य की ओर ले जाती कला-कार्यशालाएँ' और 'चित्ताकर्षक पोर्ट्रेट बनाता है पंचकूला का छात्र खुशहाल' पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। दर्शन लाल बवेजा का लेख 'खेल-खेल में विज्ञान' सदा की भाँति विज्ञान की रोचक जानकारियों से भरपूर था। खुशहाल से सभी विद्यार्थियों को प्रेरणा लेनी चाहिए। 'बाल सारथी' भाग भी बहुत ही रोचक और मनोरंजक था। रजनीश सचदेवा, मनोज कौशिक व संजीव कुमार आदि लेखकों की रचनाएँ भी बहुत पसंद आईं। अंत में मैं संपूर्ण संपादन मंडल को हार्दिक बधाई देती हूँ।

सुषमा कुमारी
कम्प्यूटर प्रशिक्षिका
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,राजगढ़
जिला-रेवाड़ी, हरियाणा

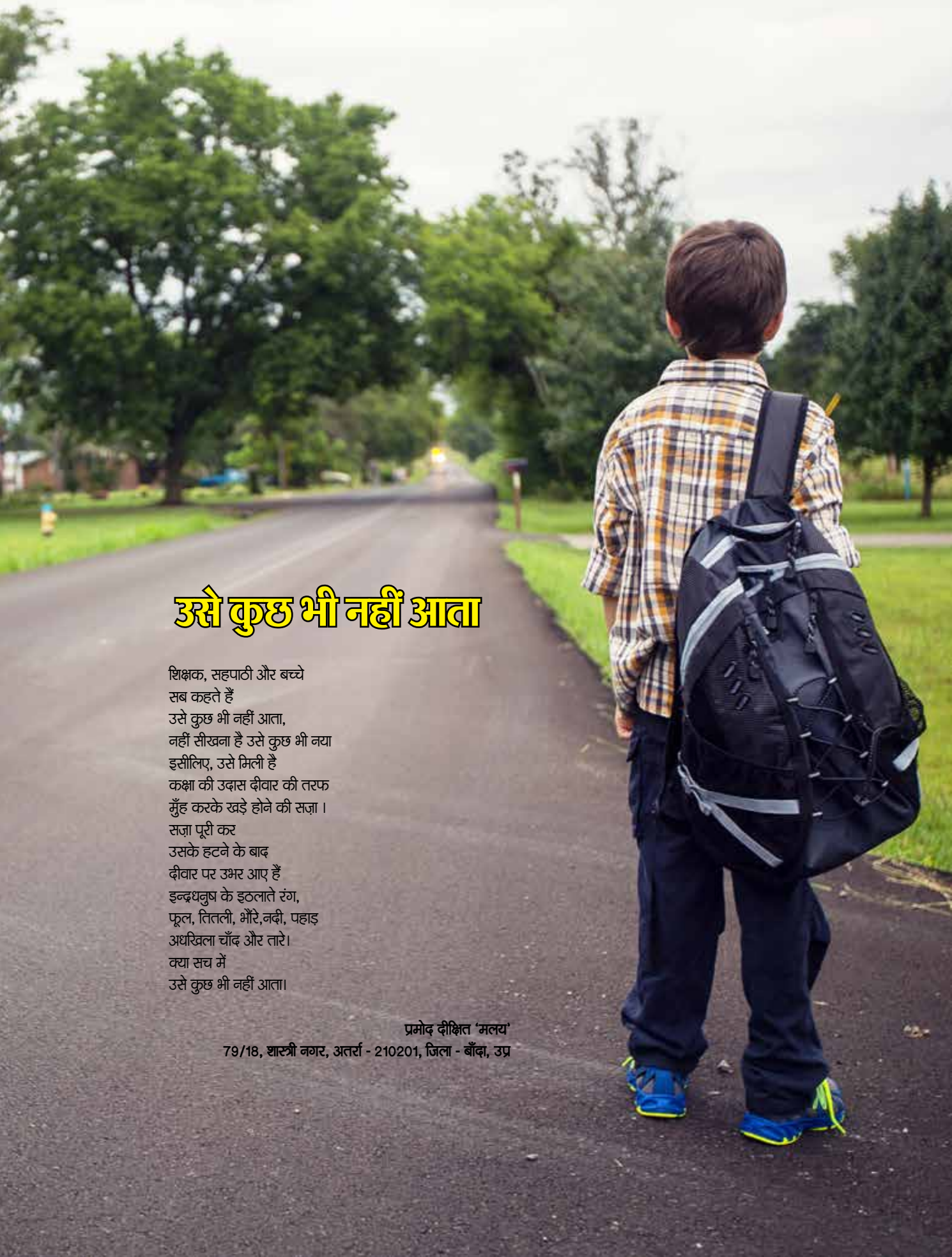

उसे कुछ भी नहीं आता

शिक्षक, सहपाठी और बच्चे
सब कहते हैं
उसे कुछ भी नहीं आता,
नहीं सीखना है उसे कुछ भी नया
इसीलिए, उसे मिली है
कक्षा की उदास दीवार की तरफ
मुँह करके खड़े होने की सज़ा ।
सज़ा पूरी कर
उसके हटने के बाद
दीवार पर उभर आए हैं
इन्द्रधनुष के इठलाते रंग,
फूल, तितली, भौंरे,नदी, पहाड़
अधखिला चाँद और तारे।
क्या सच में
उसे कुछ भी नहीं आता।

प्रमोद दीक्षित 'मलय'
79/18, शास्त्री नगर, अतर्रा - 210201, जिला - बाँदा, उप्र

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

होमवर्क

बच्चों के होमवर्क में
नहीं होतीं घर की कोई बातें
गुल्ली-डंडा, छुपम-छुपाई,
और दादी-नानी की कहानी भरी रातें।
फसलों की महक, तालाब, मेंढ़क और मछलियाँ
नीम के पेड़ पर चढ़ता-उतरता गिलहरियों का झुंड।
तवे पर नाचती गोल रोटी
गाय के गले में पड़ी घंटी की रुनझुन
नरम-नरम घास का एहसास
पत्तों पर दमकती ओस की बूँदें
सुबह की गुनगुनी धूप
और अमावस की रातें।
हाँ, बच्चों के होमवर्क में
नहीं होतीं घर की कोई बातें।

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114